Vikrama-vilāsa.

Bikram Bilas

बिक्रमबिलास॥

जिसको

क़न्नौज के रहनेवाले मुन्शी देवीसहाय और फ़र्रु-
ख़ाबादी नसरतख़ां सौदागरकी फ़र्मायशसे
चौबे भोलानाथ ने

बैतालपचीसी को दोहे चौपाई आदि अनेक
छन्दोंमें उल्था करके बड़ीशुद्धता पूर्व्वक बनाया
और मुन्शी बिहारीलाल के प्रबन्धसे समर
हिन्द मैनपुरी में छापा गयाया॥

वही

दूसरी बार

लखनऊ

मुंशीनवलकिशोरकेछापेख़ानेमेंछापागया॥

अक्टूबर सन् १८८९ ई०

श्रीगणेशायनमः

अथबिक्रमाबिलास ॥

दोहा ॥

मंगलमूरति रावरी हियधरि पायप्रसाद ॥
गजआननभाननबिघनटारनबिषमबिषाद १
शीश जटा छबिकी छटा अर्द्धचन्द्र धरभाल ॥
भक्तबच्छलसोइमोहिंपर शङ्करहोऊदयाल २

कबित्त ॥

तोरिफोरिडारेगढ़प्रबलनरेशनकेजीतेदेशदेशजोरआपनीभुजान के। मेटेहैंकलेशभेषकपटकुसाजनकेआजिजनिवाजपैजपूरेखानदान के। भोलानाथजाकोयशगावतफणीशईशदेवतामुनीशजनजानतजहानके। भयेहैंमएसेभूपहोयंगेनआगेकहूंकहांलौंबखानौंगुणबिक्रम सुजानके ॥ ३ ॥

दोहा ॥ शशमनायगुरुचरणरज बिप्रनकोशिरनाय ॥
बर्णतहौंइतिहासकछु सूक्षमसोमतिपाय ४

मोदकछन्द ॥ भुवमण्डलधारवसैनगरी। अतिसीमसुआसन सुक्खभरी ॥ तहँराजसुगन्धर्बसेनकरैं। दुखदीननकेअतिनित्तहरैं ५ वहभूपसुदेवकेलोकगयो। अबजाकोतिहूंपुरमाहिंछयो ॥ सुखशङ्कु तहांकोभुआलभयो। तिनसुक्खप्रजाकोअनेकदयो ६ ॥ दोहा ॥ कछुककालबीतेबहुरि मारिशङ्कुभूपाल ॥ धारिशीशपरछत्रपुनि बिक्रमभयोभुआल ७ हियदुष्टनकोदण्डबहु कियबिप्रनकोकाज ॥ मर्य्यादाकेकाजजग प्रकटभयोसुरराज ८ ॥ मोदकछन्द ॥ तिन जियमेंअपनेधारिलई। मतितेयहरीतिप्रतीतिभई ॥ भुवमेंभ्रमिबो हियठानिलियो। पुनिभ्रातकोराजकोभारदयो ९ देशबिदेशन भूरिकियोभ्रम। जातरह्योमनकोसबबिभ्रम ॥ लख्योएकसुबिप्र

तपोवनमें।कछुयावतहौअपनेमनमें १० ॥ दोहा ॥ ह्वैप्रसन्नतबदेवता
दियअमृतफलताहि ॥ होयअमरभुवलोकमें जोयाकोहितखाहि
११ तिनैंनिजपत्नीसोंकह्यो दियेमाहिफलदेव ॥ खायअमरसोहोय
नर सुनयाकोयहभेव १२ ॥ तोमरछन्द ॥ यहसुनीपत्नीबात । बहु
ताड़ियोनिजगात ॥ जलसोंभरेतिननैन । कछुकहनलागीबैन १३
तुमसुनोंहोहिजराव । ममबैनचित्तलगाव ॥ यहकर्मभिक्षानीच ।
यातेभलीहैमीच १४ यहदीजियेफलजाय । भुवपालकोसुखपाय ॥
सुनिगयोराजाद्वार । पहुंचायोप्रतिहार १५ फलदियोराजाहाथ ।
लैकह्योपुनिनरनाथ ॥ याकोकहागुणविप्र । कहिमोहिंअबतूक्षिप्र
१६ महराजजोफलखाय । सोअमरनरह्वैजाय ॥ यहयोग्यआपहि
नाथ । लखिजगतहोयसनाथ १७ ॥ दोहा ॥ लियोभर्तृहरिभूपफल
दियनिजपत्नीहाथ ॥ रहबसदाआनन्दसों खायसुफलगुणगाथ १८
कहिप्रियबचननरेशपुनि आयोनिजदरबार ॥ रानीकोकोतवालसों
हतोनेहनिरधार १९ तिनफलदियताकेकरहि उनदियबेश्याहाथ ॥
बहुतप्यारसोंतासुके गाहकसबगुणगाथ २० ॥ छप्पै ॥ बेश्याकियो
विचारफलहिबलिराजहिदीजै । होयअमरभुवपाल तिहुंपुरयश
कोलीजै ॥ आयतुरतदरबार राजकेकरमेंदीन्हों । देखिभयोमन
क्षोभआपहततबहीचीन्हों ॥ यहसमुझिचित्तमेंआपनेप्रचुरसुद्रब्य
मँगाइकै । दैमानदानताकहँनृपति बिदाकरीसुखपाइकै २१ ॥
दोहा ॥ ह्वैउदासनृपनेकह्यो झूंठोयहसंसार ॥ तातेतजिसबभोग
सुख भजियेहरिनिरधार २२ यहकहिकेमहलनगयो करीनकछु
अनरीति ॥ कहीकियोफलकोसुमुखि दियोतुहमकरिप्रीति २३
मैंफलकोभक्षणकियों दियेतुमकरिप्यार ॥ यहीकाढ़िकेनृपतिनें
दिखरायोतिहिबार २४ दियोनप्रतिउत्तरबहुरि धारिलियोति-
हिमौन ॥ लखिकेऐसीप्रीतिनृप आयोअपनेभौन २५ शुद्धकियो
फलकोबहुरि भोजनकियोनरेश ॥ धरिचितयोगउदासह्वै छांड़ि
दियोनिजदेश २६ ॥ कवित्त ॥ छांड्योहैसकलसुखसम्पतिऔराज
पाटछांड़ीसबप्रीतिनिजकुलपरिवारकी । इंद्रकेसमानभोगकरत
दिनरातिसोछांड़िलियोयोगमतिउदितउदारकी । भोलानाथ
कहैंचल्योबनकोनृपतित्योंहींकीनोंनानेहदेहपैनपालीबिचारकी ।
कीन्हौंहरिध्यानमनछांड़िकैकलेशजगआन्योहियज्ञानअतिकरि
मतिसारकी २७ ॥ तोमरछंद ॥ यहसुनिकैसुरराज । नृपछांड़ियो

सबकह्योतासोंभेव २८धारानगरमै
यहद्दिप्रोताहिजताव। भमद्दियो
ष। नृपभयोयोगीभेष॥ यहसुनी
त ३० नृपकियोनयप्रवेष। वहदेव
व।तूकौनहैकितजाव३१कहिनाम
प॥ ममपुरीवहसुखधाम।ताको
छंद॥मोहिंकरनरत्रासकलपुरकी
ोतोहिंनाहीयुद्धकरिलोमोपही॥
ारितिहिभूतखलियो। दिखराव
लकियो ३३ पुनिकहीदेवसोंबात
ाकेसुसातोंद्दीपकोचितचाहिराज्य
तवासोंकथाकहतूप्रापनी।दैकर्ष
ावनी ३४॥ प्रवंगछंद॥ प्रगटदेव
द्रमानकोनामतबहिंतिमपालियो॥
गयो।देखितपसीएकबङ्कतचितसु-
भूमकोपीवतो। अचरजमान्योभूप
एबारनृपतियहबातहै। लावैतपसी
ठा॥ सभामध्यतिहिकाल आयबै-
ल तपसीकन्धपढ़ायसुत ३७ विदा
मव॥ चितमेंअतिसुखमान गईवेश्या
त्यहिजायकेबलअनेककिये। सुधिकै
ाहखेलउपाजिनयो। हलबात्यहिके
। गय।चाढिहलवासकल पुनितिहि
रि कियोसोचितधनाथ ४० पूछौतप-
॥ कहीदेवकन्यासुमैं बिहरतबन
यह कहांतुम्हारोगेह॥ सुनिचितमें
२निकटयहांतिगेहमम चखियेमेरसा
ायमेंहाथ४३षटरसभोजनकोतहां
तियोंआनन्दसों तनमेंउपज्योभार
ोंतासोंभोग॥करतभोगकेगर्भतिहि
यमासको प्रगटभयोसुतसोय॥ भयो
ाय४६ चलिकरियेतीरथगमन जाते

केवलधर्मरहैसुभव औररहैनहिंकोय ७० ॥ तोमरछंद ॥ गुनुनृपति परमप्रवीन। हररंगरत्ननवीन ॥ इकदेवकीनतजान इकलाखकीयप्रमान ७१ वहसुनेराजावैन। प्रफुलितभयेचितिनैन ॥ तवखिलति लियमँगवाय। दियजोहरीकोराय ७२ कीन्होविदातिहिवार। पुनिगयोनिजदरवार ॥ करगंहेयोगीहाथ। अवसकलजनतिहिसाथ ७३ ॥ छप्पै ॥ सुनियेयोगीनाथहूतेकलमोहिकौदीने। आपदिगंवररूपकहातेयेमणकीने ॥ इतनीवातेंराजमहिंकाकहसोकहिये। यंत्रमंत्रअरुधर्मऔषधी लहिमुपरहिये ॥ मर्मसोअपनेगोहकोकहुँकवचोरिजोलीजिये। निजअववसुनेकटुवचनजोवैसवगुप्तसुकीजिये ७४ पढ़ेंप्रथमजोअववातआछीतिहिकहिये। अवमकृकामसुभितिहिचुपहैरहिये ॥ पढ़ेंमध्यवठअवतासुकोठीकनजानो। कहीनीतिकेमध्यसुखद्रूपसांचोमानो ॥ तुमचलोसंगएकांतमेंकहिहौंसवसमुझायकै। दोषहोततताकोनृपतिकहेअवर्मीपायकै७५॥दोहा॥ मैंमशानकीभूमिमें सिद्धकरतकछुकाज ॥ सिद्धहोवनवलिहिगुवतहँआयेमहराज ७६ वचनदियोराजातहां आजुगोतुमगेह ॥ योगीतवसामासकल लईकरनिकरिमेह ७७ गयोवैठिमशभूमिमें धरिमनकछुकुसाज ॥ चल्योअकेलोवीरवर राजनकोसिरताज७८ योगीकोदंडवतकरि वैठिगयोतिहिपास ॥ देखिभयंकरमूरतिहि भयोनचित्तउदास ७९ देखेतोचहुंओरहैं भूतप्रेतवैताल ॥ योगीतिनकेमध्यमें वारनवजावततार ८० कहीनृपतिकरजोरिके योकछुआज्ञाहोय ॥ सोईकृतअवकीजिये कहिवेमुखतेजोय ८१ इहांसेदक्षिणओरको कोसएककेठौर ॥ तहांसिरसकोटमहै काहलहांकरिहौर ८२ लटकाततरमेंशवतहां लावोताकोजाय ॥ ऐसेनृपकोतासमय कहीसिद्धसमुझाय ८३ योगीकोसिरनायके चलिगयोनृपवीर ॥ कवहूंमुखमोरेनहीं भरीकठिनअतिभीर ८४ तोमरछंद ॥ इकतोअँधेरीराति। पुनिवर्षजलवहुभांति॥जोमरकोईजाय। सवधीरताविनआय ८५ चहुंओरभूतवेताल। करगहेमनुजकपाल ॥ डाकिनिफिरेंचहुंओर। नाचतकरतअतिघोर ८६ गर्जतफिरतवनघोर। गहिलेऊंनृपयहिवेर ॥ यहशब्दपूरितभूमि। तवलख्योनृपनेभूमि ८७ यहवहीयोगीभाय। जोदियोदेववताय ॥ मनशोचिनृपयहवात। आगेचल्योवनजात ८८ ॥ दोहा ॥ देख्योतरुवरजायकै विक्रमपरमउदार ॥ जरतअग्निज्वालामनों सहित

सहायसहाय ८९ कियोमनमनमेंभयकछु चल्योसुतलपैजाय ॥ मारि हाथहूकखगको हीनोताहिगिराय ९० गिरतछुट्योवहरोयकै लख्योनृपतिनेसोय ॥ हूप्रसन्नमनमेंकह्यो जीवतहैयहकोय ९१ गीतिकाछंद ॥ पूछीनृपतिनेबाततासोंकहहुतुमवरकौनहौ । कैभूत प्रेतपिशाचकोहूकैंरह्योगहिमौनहौ ॥ यहसुनतखिलखिलहस्यौ वहतबबहुरिचढ़ितरुपैगयो । पुनिनृपतिजियमेंक्रोधअतिकरितासु कँखावतभयो ९२ तूकौनहैमंडालमोसोंकथाकहुसबआपनी । धोचतनृपतिमतिहो।यतैलौटहूजोदेवसिखापनी ॥ अतिलख्योसा-हसनृपतिवरकोयाँ।भिसवचाहरितियो । तूकौनहैनरपालसोक-हिवयोनहिंभ्रतरदियो ९३ हूनकहीविक्रमनाममेरोविबेतोक्रो जातहौं । पूरीभईमनकामनाअखितोहिंपरमसिखातहौं ॥ तबकही अवतौकस्योहौमैंपरतेंतिरहायमें । सुखमोहिहैबिनकहेजोतूरहौ नहिंतुवसायमें ९४ ॥ दोहा ॥ राजानेताहीसमय कीन्होंबचनप्र-मान ॥ जोसुवतिकछुमेंकहौंफिरिबूयोनिजथान ९५ बहुरिकही बैतालने सुनहुचतुरनरनाथ ॥ सुनहुबचनममअवचाहै कहतनीति कीगाथ९६ जेपंडितहैंचतुरनर तिनकेरहतअनन्द ॥ मूरखकुमति कुजातिते कलहकरतअतिमन्द ९७ कहतकथाबातेंसुखद मारग श्रमनरहाय ॥ राजनीतिमेंप्रीतिसों सुनहुनृपतिचितलाय ९८ प्र-थमकहाबीबोभई पूरीसुनहुप्रवीन ॥ सरबैतालमनतोवहअति वि-क्रममनतहँमीन ९९ ॥

पहिली कहानी ॥

दोहा ॥ कहबैतालराजासुनहु करिमनवचनसनेह ॥ नाशतदुख संदेहको अपवरकथासोएह १ ॥ तोमरछंद ॥ एकपुरीकाशीनाम । तहंशम्भुकाहैधाम ॥ जहंबसतलोगप्रवीन । बहुधर्मविद्यालीन२ तिहि नामभुकुटप्रताप । अतिसुभरवरनृपआप ॥ तिहिवज्रमुकुटसोपूत । उपमासोतासुअभूत ३ महदेविताकीबाम । सुंदरस्वरूपललाम ॥ कछिमंत्रसुतहिमहेट । खेलनगयोआखेट४ तिहिलख्योवनकोजाय । शोभाकहानहिंजाय ॥ प्रफुलितकमलतालाब । संयुक्तकरिकेभावधू बहुभोरगुञ्जतभृंग । मनोमन्दकरतअनंग ॥ अतिहासुबासितठौर । नृपमोहियोसिरमौर ६ जहंलसतहरिकोधाम । बैंहिलखिचरत मनकाम ॥ नृपकियोदर्शनजाय । आनंदचित्तबढ़ाय ७ ॥ दोहा ॥ कन्याकाहूनृपतिकी निकटसरोवरआय ॥ कियोस्नाननिर्मलम-

खिलपतिहियहर्षबढ़ाय ८ लियेसहेलीसंगसबफिरतिसरोवरतीर॥
शीतलमंदसुगंधअति चहुंदिशिबहतसमीर ९ इतरूपसुतताहीस-
मय लखनसरोवरकाज ॥गयोछांड़िमंत्रीतनय साजेसकलसमाज१०
लखिकैताकेरूपको विवशभयोमनकाम ॥ कामघटामनमथघटा बि-
च्छुटासीबाम ११ ॥ कवित्त ॥ कामकीसवारीकैधौंमन्मथकटारी
नवनवैननउघारीक्षकोरहीआलसभारसो । सोहतश्रृंगारकिधौं
आननकोओपदियेचोपहिबेचंद्रमाकोसुषमाअपारसो ॥ तैसियै
समीरधीरबहतिसुगंधसनीमिलतसुभासबलीफूलनकेहारसो । चि-
तकेपियारसोंकितनकेश्रृंगारसों हिलमिलहगनगहूभूपतिकुमार
सो १२ ॥ दोहा ॥ भयोविकलरूपकोतनय लखिहूँदीवरश्याम ॥
जारततनकोंअनखबिनु करैकुटिलमनकाम १३ राजपुत्रिकाकुंवर
को दीन्हौंचित्रहबताय ॥ पुष्पकमलकोशोभते अवबनकोठिगलाय
१४ बहुरिकुमतिबेदंतसोंबरबनलिखोदबाय ॥ पुनिलगायहिबसों
लिखोदिवसबभेदबताय१५ सूरतरूपसमभयोमर्मीमृगनयनीजोकी-
न॥ बाघोठिगनिजमित्रकेसकलभेदकहिदीन१६॥मोतीदामछंद॥
कहीनृपकेसुतनेयहबात । लखीइकसुंदरिनवननतात ॥ कहाकहि
येतिहिरूपअधीन । भयेहगवासरितापैमीन १७ चहोबहकामकी
रीतिनई । चितहेतितगतिभूलिगई ॥ यहबातनताकीसुजानधरी।
मनमेंचरचाचलिकेकोकरी १८ चढ़िकेवहअश्वगयेनिजहेम । भयो
नृपकोकछुअद्भुतभेद ॥ तनकीसुधिवाकोननेकरही । मतिकामकेपंथ
मेंभूलिगही१९॥ दोहा ॥ यहलखिकैताकीदशा मंत्रीसुततेहिवार ॥
पूछनलाग्योबातसब करिकैमनमेंप्यार २० ॥ मोतीदाम छंद ॥
जिहिप्रीतिकेपंथमेंपांवदयो । मथिबेंचिकेपाथरमोललयो ॥ पहिले
नजिबोधिरहातमपाय । जुजियोतौलिखोदुखअंगलगाय२१ सुनिउ-
तरदीनसुखेदबढ़ाय । दियोहमयामगमेंअवपाय ॥ बिधिकीगति
काहूनजानिपरै । वहराजकोनेकमेंरंककरै २२ ॥ दोहा ॥ चलत
समयनृपकोसुता कह्योकछूमहराज ॥ केहगमिलतनसुचिरहौहरी
सुमतिरतिराज २३ मिलनकठिनयैतासुको कैसेमिलिहैसोय ॥ जो
मिलिहैवहप्राणप्रिय तौममजीवनहोय २४ पुनिपूछीमंत्रीतनय
सत्यकहौसबबात ॥ करौसैनकछुबातमें सकलसुनायोतात २५
तोमरछंद ॥ सोहिलखतइतवोबात । कौन्हीसुमुखिअवदात ॥ इक
कमलफूलसुभाय । निजशीशतेसुकराय २६ लियश्रवणसोंतिनछाय।
सुनिकुतरिदंतवनाय ॥ लियचरणसोंसुदबाय । कीन्हीहृदयसों

लाय २७ ॥ दोहा ॥ यहसुनिकैदीवानसुत कहैबिहँसिकैबैन ॥ हम
समभेउननेकरी मांचीतुमसोंसैन २८ ॥ तोमरछंद ॥ तुमसमुभि
लीनीजोय । हमसोंकहौअबसोय ॥ अबसुनज़ुराजकुमार। तिहि
चरितअमितउदार २९ ॥ दोहा ॥ करनाटककेदेशमम पद्मावतीसो
नाम ॥ पितानाममहेदंतबट तुमममहियकेधाम ३० यहसुनिकैहर्षित
भयो कह्योबचनपरबीन ॥ चलोतासुकेदेशको ममहितहुमआधीन
३१ ॥ गीतिकाछंद ॥ तिनलियोसाजिहथ्यारसबहीसाथमेंकछुधन
लियो। हूै अश्वभेआरूढ़दोउगमनतिहिपुरकोकियो ॥ पङ्ंचेकछुक
दिनराहमेंबसिदेशकरनाटकभले। आयेमहलकेनिकटदोनोंसकल
मनकारजफले ३२ देखेकहाएकवृद्धयुवती कातिकेसूतहिरही ।
तासोंकहीहमरहनकारणमांगिबेआयेसही ॥ उनकहोरहियेप्या
रसोंयहगेहअपनोजानिये। उतरेतहांकरिचित्तआनँदवृद्धबचनप्र-
मानिये ३३ पुनिकहीहैदीवानकेसुतवृद्धतवसुतहैकहां। उनकह्यो
मेरेनांहिंकोउजरहतकरिआनँदवहां ॥ पुनिकह्योहैमहराजऐसे
कहांभोजनपाइयो । इनकहीपद्मावतीकन्यापालितनसुतछाइयो
३४ ताकेसदनतेमिलतमोकोखानपानसुजानहै। मैंजातिवाकेमेंह
नितप्रतिकरतिमेरोमानहै ॥ इनकहीजातेसमयमेरीबातकछुसुनि
जाइयो । उनकहीमोसोंअबैकहियेसकलताहिसुनाइयो ३५ यह
कहिसुवासोंजायकेतूजेठसुदिपंचमिगई । बोलख्योनृपसुतनिकट
सरवरसैनतोसोंजोभई ॥सोकरनपूरणबातअपनीआइयोयादेशमें।
येसकलबातेंतासुआगे कहीआबसुवेषमें ३६ यहसुनतबुढ़ियाबचन
ताकेराजमंदिरजायकै। देखीअकेलीनृपतिकन्याबचनताहिसुना
यकै ॥ बोलीमनोहरपरमबाणीसुनिसुताबुधिवानहै। तेरेमनोरथ
सकलपूरेकरेंनितभगवानहै ३७ यहकहिकह्योजोनृपतिसुतनेसो
कहीसबबातहै।सुनिक्रोधकरिकैभरिकैचन्दनदियेताकेहाथहै ॥ यह
तुरतआईनृपतिसुतपैभेदवासोंसबकह्यो । सुनिभयोमूरखनृपति
सुततबभेदमंत्रीसबलह्यो।महराजउननेकहीयासोंसोसमुभिकैली-
जिये ॥ दशद्योसबेहैंचांदनीकेतिन्हैंबीतनदीजिये ॥जबव्यतीतेद्योस
दशवेआयपुनिदूतीकहीकेशरभरीपुनितीनअंगुलीगरेपैमारीसही
३८ ह्यांसेवकुरिसोआबदूतीगईताहिदिखाइयो । नृपसुतभयो
लखिबिकलमनमेंभेदमंत्रीपाइयो ॥ रङ्गसुचितमूरखर्तानदिनको
लिख्योवानेनामहैबीतेदिवसजबअवधिदूतीगईताकेधामहै३९जाइके

जनकुशलपूछीक्रोधकियजनवाडिके। पश्चिमदिशाकेआयहारेगई याकेकाढ़िके ॥ इनआइकेतवन्दपतिसुतसोंभेददियसमुझायके। सुनिकेबिरहकेजदधिबूडयोसुमतिसकलगमायकै ४० ॥ तोमरछंद ॥ पुनिकहीमंत्रीबात। ममवचनसुनियेतात ॥ वाहीदिशाकीराइ। तुमकोबुलायोनाह ४१ यहसुनिसवैसवसंग। लियेलायभूषणसंग ॥ बहुसजेवस्त्रबनाय। भयेसुचितअतिसुखपाय ४२ ॥ दोहा ॥ गईनि-शायुगयामजबनरनारीरहेसोय ॥ पहुंचेताहीद्वारपैसुमतिदुहूदुख धोय४३ देखैतोन्दपकुंवरिसोठाढ़ीदेखतराह॥ मृगनयनीशशिवदनि लखिजपजीचितमेंचाह ४४ मंत्रीसुतठाढ़ोरह्यो न्टपसुतगयोतिहि संग॥ पकरेकरदुहुकरनमें अँगअँगमच्योअनंग ४५ देख्योमहलसों जायके अद्भुतबन्योसमाज ॥ होयथकितमनवदपिकहुं निरखेजो रतिराज ४६ अपनेअपनेअदबसों खड़ीसखीचहुंओर ॥ अतरसु-वासितभूमिसब बहलपहलसबठौर ४७ ताहीमंदिरमेंतबै न्टपसुत दियोबिठाय ॥ पहिरायेहैंहारभर चन्दनदियोलगाय ४८ कुंवरि आपनेहाथसों लागीकरनबयारि ॥ मनहुंइन्दिराअमरतजिआ-ईओपसम्हारि ४९ कहीकुंवरकरजोरिके लखितुम्हरोअमभूरि ॥ कोमलकरथाकेगनहिं जियकोजीवनमूरि ५० यहसुनिकेदासी सकललागींकरनबयारि॥ दोऊअतिआनंदमेंबैठेतनद्युतिधारि५१ रातिदिवसयारीतिते बिलसेभोगबिहार॥ आवनअपनेमित्रपैचाहे राजकुमार ५२ एकदिवसबोधतहुतो मित्रसुशुवअवदात॥ एतेमें न्टपकीसुता आयकहीयहबात५३ सोचकहांचितआपकेहियेमेंमो-हिंसुनाय ॥ महाराजएककाकमेंसोसबदेहुं नशाव ५४ परमचतुर दुःखमित्रमम सोनहिंदेख्योंनैन ॥ तातेंव्याकुलचित्तहै सुनुप्रियसांचे बैन ५५ जाहुआपवाकेनिकट देसुखबहुसमुझाय ॥ अहिमानीताके लिये लेआयोसुखपाय५६षटरससामाविषमिलितदीन्हींसाथपठा य ॥ भेज्योन्टपकेतनयको अतिहियहर्षबढ़ाय५७ आवतदेख्योराज सुत मंत्रीअतिसुखपाय॥तबहिंप्यारसोंतासुकोलीनोकंठलगाय ५८ बैठेबहुकुशलातके पूछनलागेबैन ॥ सामग्रीदेखीसकल तानेअपनेनैन ५९ ॥ मोदकछंद ॥ न्टपकीतनयायहतोकहदीन। बड़ेसुखसोंकरि प्रीतिनवीन॥ लखिपाककोतासुनेक्रोधकियो। हमको उहिनेविष घोरिदियो ६० उहिनेयहसामासबैपठई ॥ यहप्रीतिबड़ीहमसा-हिंभई॥ न्टपनेकहिकैसेसुजानतहौ। रसकोविषक्योंसुबखानतहौ।

६१ दूनतामेंहतेकछुवहनुउठाय। हर्ईमुनिध्यानकोपासबुलाय ॥ म-
रयोबहखातजबैविषध्यान। लखिसुखिगयेनृपकेतबप्रान ६२ जुग्मा
यहकौनकियोहमकाज। भयेबिपकेबधमेंसुसमाज ॥ तबयोंहंसिबा
तप्रधानकही। जुनबित्तवहीसुभईनसही ६३ ॥ दोहा ॥ नृपअह
यतनसोंकीजिये पुनितिहिमंदिरजाय ॥ बहुतनेहकीतासुसों क-
ह्यिबेबातबनाय ६४ यथनकीजियेतासुढिगजबनिद्राबशहोय ॥भूषण
ताकेछोरिकै बांधिलीजियेसोय ६५ करिबिपुलकोचिन्हपुनिजाय
बंधकेमाह॥आयोमेरेपासतुम कह्योकरौनिबाह ६६ जाबिधिसों
मंत्रीतनय नृपकोदियोसिखाय ॥ताहीबिधिसोंआयउनकीनोंकर्म
बनाय ६७ आयोअपनेभिनपै सकलकहीसमुझाय ॥ बनियोगीका
भेषदोउबनमेंबैठेजाय ६८ आयोनृपकोतनयपुनिलगतजहांबाजार॥
भूषणरानीकेसकल बिक्रयकरनबिचार ६९ स्वर्णकारदेखेसकल
भूषणरानीकेर ॥ ताहिपकरिकोतवालपै गयोनकीनीदेर ७०
सवैया ॥ बातकहीकोतवालनेतासों कहांनबभूषणकौनतेलीने ।
जानतनाहिंहौभेदकछू महराजगुरूमोहिंबेचनदीने ॥ कौनगुरू
कहँधामहैतासुकोभेजियेदूतजोहोयप्रबीनो। दूतनजायकेयोगिहि
लायकैत्योंभिरनायकेहाजिरकीनो ७१ ॥ सोरठा ॥ पूछतराजाबात
कहीनायसतिभावसों ॥ येमभूषणतात कैसेकरितुमबशकिये ७२
सुनकुंवचनमहराजयुक्तपथभौदसिगई ॥ डाकिनिमंत्रसुसाज,बोली
ताकेनिकटमें ७३ भूषणसकलउतारि बामजंघमेंचिन्हकरि ॥ करि
त्रिशूलअनुहारि पठईताकेबासको ७४ ॥ दोहा ॥ यहसुनिकेमह-
राजतब अपनेमंदिरजाय ॥ कहीसकलनृपबारता रानीकोसमु-
झाय ७५ देख्योरानीजायकै चिन्हसुताकोदेह ॥ कहीनृपतिसों
सबबखी बहुरिकियोमनतेह ७६ कह्योनृपतिसोंआयकै सत्यआप
केबैन॥लख्योचिन्हतिरशूलकोसुताजंघमेंमैन ७७ सुनिआयोदरबा
रनृप योगिहिकियोप्रणाम॥कहीयतलकहतासुको होयपियाबिन
धाम ७८ महाराजयहनीतिमें कह्योमनुसुमिलेउ ॥ गुणपंडित
कबिमित्रअरु वैद्यसजनसमएउ ७९ होइकोऊकुलआपने समुझि
आपथितलेहु ॥ कछुउपायनहिंतासुको देशनिकारोदेहु ८० नृप
सुतसबसुभैनहीं तमकोकपटअपार ॥ तोरिनेहअपनीसुता दीनी
नग्रनिकार ८१ ॥ तोमरछंद ॥ नमराजकोसमुझाय। कहिमीतिबि-
बिधिबनाय ॥ पुरगयेबनमेंगूढ़ ।ह्वै अश्वपेआरूढ़ ८२ सँगलईनृपकी

बाल। धरिनृपपरततकाल ॥ पड़ेवेसोनृपनेदेष । अतिक्रियोनि-मंत्रभेष ८३ अपनेमहलमेंजाय। बैठेसुचितथलपाय ॥ यहसुनीसबने बात। आयोनृपतिकोतात ८४ घरमेंभयोआनन्द। ज्यौंकुमुददेखै चंद ॥ त्यौंनृपतिअतिहर्षाय । सुतकोलियोउरलाय ८५ लखिवधू अतिसुखकीन। बहुदानविप्रनदीन ॥ बाजीहैदुंदुभिद्वार। कीन्हो नृपतिदरबार ८६ ॥ दोहा ॥ इतनोकहिबैतालने प्रश्नकियोसुख पाय ॥ विक्रमइनमेंकौनको भयोपापसरसाय ८७ कहीनृपतिने राजको पापभयोअतिभूरि ॥ कैसेसुनिबैतालने प्रश्नकियोभरिपूरि ८८ ॥ हरिगीतिकाछंद ॥ दीवानसुतनेकाजअपनेमित्रकोचितदै कियो। कोतवालघाकरजानिआपकोनृपतिडरडरपोहियो ॥ सु-ताताहीराजकीन्हेकामकोआनँदलियो । बिनासमुझेमूढ़राजा काढ़िताकोबनदियो ८९ ॥ दोहा ॥ याहीतेआराजको पापभयो बैताल ॥ सुनिकैताहीदृक्षपै जायचढ्योततकाल ॥ ९० ॥

दूसरी कहानी ॥

दोहा ॥ चल्योनृपतिकेसंगपुनि हियमेंअतिसुखपाय ॥ कही कहानीदूसरी राजाकोसमुझाय १ धर्मस्थलइकनगरहैनामजानि नृपलेऊ ॥ राज्यगुणाधिपनृपकरे संयुतनीतिसनेऊ २ ॥ मोतीदाम छंद ॥ तहँकेशवनामबसेद्विजराज। करैजपसंयमनित्तसुकाज ॥ सुता द्विजकेघरएकललाम। मधुमावतितासुकोटेरतनाम ३ भईवरयोग जबैवहबाल। भयोद्विजशोचमहाततकाल ॥गयोद्विजसोयजमानके गेह। हियेमधिपालिकेतासुसनेह ४ गयोद्विजकोसुतऔरहिग्राम। गुरूकेगृहमेंपढ़िबेमतिधाम ॥ पुनिताद्विजकेइकबालकआय । दियो तहँदर्शनचित्तकेचाय ५ कहीद्विजकीपत्नीयहबात। हमदेहिंसुता अपनीतोहिंतात ॥ इनतोयहबातकहीसुकही । द्विजमेंपुनिऔर हियेमेंचही ६ लख्योइकबालकरूपउदार। मनोंभुवमेंप्रगट्योवर मार ॥ कहीयहतासोंहियेमधिचाहि। सुताअपनीतोहिंदेहुंगेब्या-हि७ पढ़िबेकहँजोद्विजपुत्रगयो। तहांउननेलखिबालतयो॥ अपनी भगिनीहमहूं कहंदेहि। तिहंपुरमेंयशकोलहिलेहि ८ कछुबीति

गयेलखिवासरत्यौं। सुलियोसंगवालदुखंकरत्यौं। द्विजश्रीद्विजको सुतआयगयो। सगरेगृहमेंसुखछायगयो ९ पढिलोइकबालकबैठोजहां। पुनिहैद्विजकेसुतआयेतहां॥ लखितीनिकोदेखि घँदेशभयो। विधिनेयहकैसोकुयोगठयो १० पढिलोसोचिविक्रमनामगनो। पुनिदूसरोवामननामभनो॥ मधुसूदनतीसरो आनकवित्त। सबहीगुणमेंसममानहंमित्त ११॥ दोहा॥ चित्तमें चिन्ताकरतद्विज कियोकौनमैंकाज॥इककन्यावरतीनियेकैसेरहि हैलाज १२ ऐसेशोचतद्विजहुतो कहकोजैचितचाहि॥ कन्याताकी सर्पने डसीसुतिहिछनमाहि १३ कियोयत्नतानेबहुत गाडुरितुरत बुलाय॥ मेटीकापैजातहै जोविधिदईरचाय १४काटतइतनेनघतमें इतनेसंगनवीच॥ उतरतविषकबहूंनहीं जोअमृतकोउसींच १५ कहततासुकोभेदसब सुनहुगुणीजनबैन॥ पंचमीषष्ठीअष्टमीनवमी चौदसिऐन १६ शनिमंगलहैवारयेअौरनषतसुनिलेहु॥ रोहिणी कृत्तिकामूलअरु मघाविशाखाएहु १७ इलेषाइननषतमें जोकहु काटेसर्प॥ करोयत्नकोटिकतजु नहिंउतरेतिहिदर्प १८ दुंद्रीअधर कपोलअरु कोखिनाभिअरग्रीव॥ काटेफणिइनअंगजो जानोदुख कीसींव १९ उठिउठिअपनेगेहको गयेसकलगुणवान॥ करीक्रिया द्विजसुताकीबहुतकियेदुखकान २० गेहगयोजबविप्रबर शोकमगन ह्वै चित्त॥ इनतीनोंतहंआयकै यत्नकियोसुनिमित्त २१ एकअस्थि कोबांधिद्विज योगीभयोतेहिबार॥ दूजोरजकोबांधिकैरह्योतहां मनमार २२ तीजोगयोविदेशरमिपहुंच्योकाहूदेश॥गयोक्षुधित ह्वै विप्रगृहयतिहीमेंलभेश२३ आनिअतिथितबविप्रवरलीन्होपासबिठाय॥पत्नीताहीविप्रकीलाईभोजनचाय २४ कछुकारणसोपर देशमें इतनेअवसरबीच॥ मचल्योद्विजकोसुततहांउघरगोताकीमी च२५ जननीनेकरिक्रोधसुतदियोअग्निमेंडारि॥ लखियोगीउठ केचल्योकीन्हेंबिनाअहार २६ पकरोद्विजनेधायकेक्योंनहिंभोजन कीन॥ कह्योगीतेरीमियाडारिआगिसुतदीन २७ होतराक्षसी कर्मजहँ तहांनबैठतजाय॥ यहसुनिजपिकहुमंत्रउन लीन्हौपुत्र जिवाय२८॥ तोमरछंद॥ यहलख्योकर्मअभूत। द्विजरामकीकरतूत॥ कीन्होंयतीसुविचार। लीनैसोपुस्तकचार २९ यातेनिकारौं मंत्र। यामध्यसबरेतंत्र॥ याकोचलोलेसाथ। बहधारिचितगुणगाथ ३०अनतरखिगोनिजधाम। निशिकेगयेशुभयाम॥ जबगयेसगरेसोय।

जोगीजग्योदुखधोय ३१ यहजोरिपुसतकलीन । तहंतेचल्योसोप्र-
वीन ॥ कितनेकदिवसबिताय । सबभूमिपर्ख्योआय ३२ होजलके
द्विजराय । उठिमिलेचितकेचाय ॥ पढ़ीसुबातपविच । कछुपढ़ीवि-
द्यामिच ३३ ॥ दोहा ॥ संजीवनिविद्यापढ़ी सुनोमित्रचितलाय ॥
पढ़ीसुतोद्विजकीसुता दीजैमोंनजिवाय ३४ अस्थिसुरजकोढेर
करि काढ़िमंचजपिवीर ॥ सुमुखिसुजोवनिजीउठी चेतनसज्योश-
रीर ३५ ताकेलखिकेरूपके भयेकामआधीन ॥ आपुसमेंझगरनलगे
वेद्विजसुततीन ३६ कहिवैतालबोल्योवहुरि सुनुविक्रममहराज ॥
भईवामवहकौनकीलोकजनकीचिरताव ३७ प्रतिउत्तरविक्रमदियो
सुनुवैतालवरवीर ॥ मढ़ीलायजोद्विजरह्यो ताकीनारिसुधीर ३८
पुनिबोल्योवैतालयह सुनोनृपतिपरवीन ॥ जोनराखतोअस्थि
द्विज तोकछुबतरहीन ३९ जोविद्यानहिंसीखतो वहद्विजचितके
चाय ॥ तोवहकैसेजीवती कहौमोहिंसमुझाय ४० जानेराखेअस्थि
ठिगसोताकोपैपुत्र ॥ जीवदानजानेदियो सोईपितापविच ४१
याकारनताकीभई पत्नीसोईवाम ॥ इहसुनतावैतालपुनि लटकत
भयोसकाम ४२ बहुरिबांधिवैतालकोलीन्होंअपनेसाथ ॥ कहत
कहानीतीसरीसुनिलीजैनरनाथ ४३ ॥

तीसरी कहानी ॥

गीतिकाछंद ॥ वैतालबोल्योसुनोंराजाबातइकसुनिलीजिये ॥ वर्द्धवा
नसुदेससुन्दरसुनतचैनपतीजिये ॥ तहँरूपसेनअनूपभूपतिराजतहंकी
करतहै । नीतिसोअवतारजानों दीनकेदुखहरतहैं १ ॥ प्लवंगमछन्द ॥
ताकीड्योढ़ीमाहिंघोरकछुइकरह्यो । तुरतबोलिदरवानन्नृपतिनेयों
कह्यो ॥ कहोसत्यसबबातद्वारकहभोरहै । देखिकहौसमुझायसुमति
वरवीरहै २ महाराजसुनुवचनवैदनहिंआवहीं । धनदद्वारपरआय
चित्तबहुभावहीं ॥ तिनहींकोयहशोरगयोसमुझायकै । सुनिराजानृप
चापरहोचिरनायकै ३ दक्षिणदिशतेइकवीरवरआइवो । सकल
सजेहथियारसुबचनसुनाइयो ॥ राजद्वारमैंआयतासुनेयोंकही ।
अवरिकरोअहँराजचाकरीहमचही ४ द्वारपालत्योंजाकेराजसमुझ
ायवे । आयोइहांइकवीरधामतुमपाइके ॥ कहोराजअवहंलाउ
तुरतसोआइयो । राजाकोसिरनायसुवैठकपाइयो ५ राजापूछे

मरदोजकहलेजगे। कह्योमोहिंसमुझायसोउत्तरदेहुगे॥बोल्योतब
होबीरबपतिसुनिलीजिये। तोलैद्रंमसहस्रनित्तमोहिंदीजिये ६
राजापूछीसंगकितोपरिवारहै। कहैसंगमेंपुत्रस्त्रीसाथहै॥एक
पुत्रिकाऔरसुनोनृपनाथहै ७ यहसुनिकैसबसभाहँसीमुखफेरकै।
मांग्योद्रव्यअनबहुतकह्योकहहेरिकै॥कीनोचित्तविचारकामकह
माहूहै। जोलिसुमंत्रीबातकहीसमुझायहै ८ तोलैद्रंमसहस्रनित्त
बहिदीजिबो। इहीजोयाहीरीतिनकमतीकीजिबो॥मिलनलग्यो
तिहिनित्यसुधौनेहायमें। आधोदीनोदामरख्योनहिंसाथमें ९
आधेमेंदेवर्दसुत्रोगिनकोदियो। नित्यखरचकैकाजकछुकनिजकर
लियो॥याहीरीतिसुआनकरतुसोसबरहै।रक्षापलगसुनित्तरैमह
लेंबहै १० अबहौंनिशिकोआयपलंगपैसोवतो। जागिपरैजोकहूंबीर
बरषोवतो॥रहैजोसदासुचेतसोरश्रामीसेवमें। औरनहींकछुकाज
करेवहभेवमें ११ ॥दोहा॥ कोहूंजोविक्रयकरै बस्तुसुधनकेहेत॥
सदाचकरियाआपबो तनविक्रयकरिदेत १२ ॥प्लवंगछन्द॥ याही
तेजोचतुरकहैयहबातहै।सेवाबातैंकठिनधर्मअवदातहै॥एकदिना
कीबातनिशाथोड़ीगई। मरघटमेंआवाजआवतीएकनई १३ राजा
कहापुकारिबीरबरहैकहां। दूजेउत्तरदियोटेरिकैहौंइहां॥
देखोतुमजाजायकौनयहरोवई।आरतकरतपुकारनींदकोखोवई
१४गयोबीरबरतहांजहांवहनारिहै।ताकेपीछेनृपतिगयोसुविचा
रिहै॥ देखीतानेजायतहांएकसुंदरी। पहिरेभूषणलसेचन्द्रद्युतिमं
दरी १५ पूछीतासोंबीरकहोक्योंरोवती। आवककेसेनैनतिन्हैं
जलधोवती॥कहीतासुनेबातबीरसुनिलीजिये।राजलक्ष्मीमोहिं
आपगनिलीजिये १६ कहीबीरवरबालसोकारणकहुसबै। सत्य
कहोसबबातसुपूछतहौंअबै॥राजाकरतमनोतिविपतितहँआइहै
मैंनहिंताकेरहूंकहीसमुझायहै १७ एकमासकेजातनृपतिदुखपाव
है।ताहीदुखमेंपागिनिपटमरिजायहै॥ताहीकारणपाययहांमैं
रोवती।ताकीकरिकैयादनयनदुखधोवती १८ कहीबीरवरबात
यतनकछुताघुको।राजासुखसोंरहैमिहितरनिवासुको॥बोलीपूरव
औरकोउसोबोघानहै।ताकोतूनिजपुत्रदेहुबिरदानहै १९ राजाजिके
घातनपांपुत्रसोंगेहमें। यहसुनिकेंगृहगयोसत्यकरिनेहमें॥राजा
तेहीसंगचल्योछुहआइयो।लखिवेकोतिहिबीरवीरसंगधाइयो२०
तिननिजधामजगायकहीयहबातहै। तूनिजसुतकोमोहिंदेहुकरि

घातहै ॥ याकेशिरकेदियेराजबचिजायगो । रहैहमारोधर्मअधर्मन-
शायगो २१ यहसुनिकैसुतकहीधर्मकोरीतिहै । होबतुम्हारो
कामटरैसबभीतिहै ॥ कहीबीरबरबातबङ्करिनिजबामसों । होय
सुखितसोदेवसरैसो कामसों २२ पुनिकोलीतिहिबामसुनङ्प्रिय
प्रानहै । मेरेतोगतितुहीसत्ययहबानहै ॥ कहीपुत्रसुतजनकदेहकि-
हिकामकी । करियेस्वामीकाजसुगतिपरमानकी २३ ऐसेकहते
गयेभवानीगेहको । करिकेपूजादेविकह्योकरिनेहको ॥ नृपतिजिये
शतबर्षमनावङ्ईशमें । यहकहिकेयकखड्गदियोसुतशीशमें २४ देखि
भ्रातकोघातभगिनिताकीमरी । मारीबामबरबीरदेहनहिंकछुकरी
॥ लख्योबीरबरमैंनमरयोपरिवारहै । कहाकरूंअबलैकरोकियोजोबि
चारहै२५ यहकहिकैनिजशीशकाटिबोतासमैं । राजाकियोविचार
उचितयहनाहिमैं ॥ मरोहमारोकाजसकलपरिवारहै । तातेनृपतिने
मरणबिचारयोसारहै२६ त्योंहींनृपनेखड्गलियोकरसाथहै । पकरयो
देवीआपनृपतिकोहाथहै ॥ कहीपुत्रवरमांगकियोसाहसभलो । मां-
ग्योनृपवरसकलजियेममसँगचलै २७ कहीभवानीसकलप्राणबेपाय
है । अमृतलैतिहिबेरदियोसुजिवायहै ॥ जयजयकरिसबउठेलख्योनृप
नैनहै । बङ्करिदेविसोंराजकह्येबैनहै २८ दीन्होंआधोराजराज
बरबीरको । जानिसाहसीशूरबीरअधीरको ॥ त्योंपूछीबैतालनृ-
पतिकोहेरिकै । इनमेंकोसतवानकहोसबटेरिकै २९ ॥ दोहा ॥
कहीबातविक्रमसुमति सुनङ्बीरबैताल ॥ राजाकोसतअधिकहै
मरतुहतोतिहिकाल ३० कहीबातबैतालने कैसेभयोनबेश ॥ इया
प्राणबारोंदिये कहियेबचनसुबेश ३१ सेवककोयहधर्महै करैराज
कोकाज ॥ ताहीकोयशबढ़तहै रहैजगतमेंलाज३२राजानेसेवकलिये
देनचह्योनिजजीव ॥ ताहीतेसतअधिकभो सुनोसुमतिकेसीव ३३ ॥

चौथी कहानी ॥

दोहा ॥ बाणीउदधिबैतालकी विक्रमसमरअगीश ॥ बढ़ततोय
समबुद्धिवर सुमतिसुविश्वेबीश १ भोगवतीनगरीप्रगट सुतुविक्रम
भूपाल ॥ रूपसेनराजातहां परमउदारदयाल २ ताढिगशुकइक
अतिचतुर राजपूछियोताश ॥ तूजानतकहबातजो मोसोंकरस
प्रकाश ३ ॥ चौपाई ॥ सुनौराजममउत्तमबाणी । सहितसभासद

जेतिकप्राणी ॥ मगधनामइकसुंदरदेशा । मगधेश्वरतहँवसतनरेशा ४
चन्द्रावतीतासुकन्यावर । सोतुरहिबरेसमुझअपनेउर ॥ सुनीनृपपति
अवशुकजरबानी । बोलिलियेपण्डितमुनिज्ञानी ५ बाल्योनृपपति
द्विजनसोंबैना । शोधिसमुझिसबकहियेऐना ॥ मोरिबिवाहकौनसँग
हाई । सोसमुझायकहोद्विजसाई ६ कहेसकलद्विजसुनृपएहा ।
चन्द्रावतिसनहोयसनेहा ॥ सुनेद्विजनकेऐसेबैना । प्रफुलितभयेनृ-
पतिकेनैना ७ बोलिलियोद्विजनृपतितासुछिन । समुझायोतिहि
शुभगवनगिन ॥ मगधदेशकोदियोपठाय । प्रीतिप्रतीतिरीति
समुझाय बटरूपसेनकीसुताअनूपा । तिहिढिगरहसारिकारूपा ॥
मदनमंजरीनामसुहावा । नृपतनयाकरसँगतेहिपावा ८ जैसेनृप
नेशुकसनकही । सोईनृपकन्यासितकही ॥ सुनकुंसारिकावचन
हमारा । ममअनुरूपकोनृपतिउदारा १० सुनुनृपसुताकहकुंवर
बानी । भोगवतीनगरीसुखदानी ॥ रूपसेनराजातहँभारी । तो
बिवाहसँगहोयसोतारी ११ अहसुनिनृपकुंवरीकुमारी । मनहुंके
ममकिवेबिचारी ॥ पठुंज्योद्विजतारोजादेश । अतिसुंदरवरनिर्मल
भेश १२ कहेउसँदेशरा॰सनजाई । सुनिनृपमातेज्यौंचयहरषाई ॥
तासुसंगनिजविप्रपठावा । मंगलसामागोंठिबँधावा १३ कहउनृपति
सनविपतिहमारी । तुमसबभांतिचतुरसुविचारी ॥ यहिविधिदोउ
द्विजसंगपठावें । कछुकदिवसबीतेगृहआये १४ अथनृपतिसनकह
इतिहासा । सुनिप्रफुलितसबभयेअवासा ॥ सजिचतुरंगिसेनसु-
बढ़ाई । ब्याहनचलेउनिशानबजाई १५ ॥ दोहा ॥ दिवसकछुक
बीतेनृपति पठुंज्योताकेदेश ॥ करिबिवाहलैआमसँग निजगृहचले-
उनरेश १६ ॥ सोरठा ॥ चलतसमयनृपबाम मदनमंजरीसारिका ॥
सँगलीन्हीअभिराम मानिबालपनप्रीतिको १७ ॥ चौपाई ॥ कछुक
दिवसमारगमहिबिताई । नृपसुदेशमहँपहुंचेआई ॥ रहनलगेउमं-
दिरवरवासा । सुखदअहंदिशिपुष्पसुपासा १८ एकदिवसकरयह
इतिहासा । शुकसारिकाधरेनृपपासा ॥ कहतप्रियाप्रीतमयहबा-
ता । देखहुदूनकरनामविधाता १९ रहतअहंपिंजरादोउबीचा ।
करयब्याहदूनकरमतिसीचा ॥ सुनिनृपपिंजराबड़ामंगाई । शुकसा-
रिकाद्विचेरखवाई २० कछुकदिवसबीतेइहिभांती । नृपप्रतिलखी
रानिवतराती ॥ कहशुकसुनहुसारिकाबानी । कामविवशजगजे-
तिकनीप्रा २१ जेहिजगतनधरिविषयनकीना । नियउमूढ़जिमि

जलबिनमीना ॥ यातेमोसँगरमिप्रियनारी । तुम्हतिमोहिंप्राणन
तेप्यारी २२ सुनिअसबचनसारिकाकही । मोहिंपुरुषकरचाह
नरही ॥ कहशुककवनपापनरकीना । जातेंअसप्रश्नचितधरिलीं-
ना २३ ॥ दोहा ॥ मैनाकहपापीपुरुष दगाबाजमतिमूढ़ । तातेमैं
दियछांड़िकै रहनकामआरूढ़ २४ ॥ सोरठा ॥ कहशुकसुनहुंसुजान
नारीअधमसुपापिनी ॥ परपतिरतिदिनराति निकरकुकर्मणिपा
सतै २५ ॥ चौपाई ॥ जबयहिभांतिबचनदोउकहेऊ । दोउनिजमति
करिपारनलहेऊ ॥ तबन्टपकहेउसुनौममबानी । केहिकारणदोउ
झगड़तप्रानी २६ कहसारिकासुनहुंन्टपबाता । पुरुषकरतनित
त्रियकरघाता ॥ मैंयककथाकहहुंसुनिलीजै । बचनसुधाममश्रवणन
पीजै २७ इलापुरइकनगरसुहावा । तेहिपुरबसिइकधनिकबनावा ॥
सन्ततिहोयनताकेगेहा । तातेहरिपदकरेउसनेहा २८ तीरथ
नेमबहुतब्रतसाधा । जातेहोयनसंततिबाधा ॥ सेवतहरिपददिन
बहुगयऊ । गर्भतासुरानीकेभयऊ २९ जनमेतासुगेहसुन्दरसुत ।
दानग्राहदीन्हेंअतिअद्भुत ॥ ग्रामअनेकसुबिप्रनदीने । करिकैबिनय
सुपूरणकीने ३० ॥ दोहा ॥ पांचबर्षकोसुतभयो बणिकहृदयसो
बिचारि ॥ पढ़नहेतुचटसारपै दीनोंताहिबिठारि ३१ ॥ सोरठा ॥
सोअभागमतिमन्द बिप्रनीकआयेनहीं ॥ करिपितुसोंछलछन्द
जायजुआंखेलैकुमति ३२ ॥ चौपाई ॥ गयउग्राहपुनिअमरसुलोकू ।
भयउतासुगृहअतिबड़शोकू ॥ तासुतकोअससुनहुंकहानी । भयउ
अइच्छितकारणजानी ३३ खेलैजुआंरहैबेश्याघर । सुनहुंतासुकर
लक्षणन्टपवर ॥ धनकररहितभयउसोबालक । भयउअसितमहाकुल
घालक ३४ अन्यदेशकहंकीनपयाना । जायचन्द्रपुरकेनियराना ॥
[illegible]गुप्तहंबणिकसुरहई । आयतासुगृहअसबचकहई ३५ जाय
[illegible]ाकरलीनेउनामा । सुनिउठिमिलेउग्राहसुखधामा ॥ पूछत
[illegible]नभोकेहिहेतू । कहतबणिकसुतकपटसहेतू ३६ गयोबणिजको
[illegible]नाहा । आयनहाजसिन्धुकेमाहा ॥ तहांबेगकरिचलीबयारी ।
डूब[illegible]हाजभईममबारी ३७ बचेउमहाकरिकष्टउपाई । बिधिगति
अलखकहीनहिंजाई ॥ काविधिनगरआपनेजाऊं । जायकहामुख
उनहिंदिखाऊं ३८ यहसुनिसाहशोचिमनमाहीं । हरषिहिये
प्रभुगहीसुबाहीं ॥ ममगृहकन्यादीजैयाही । जोकुछबनेसमय
[illegible]रबाहीं ३९ ॥ दोहा ॥ ऐसेदढ़कतबांधिकै गयोबामकेपास ॥

अरु तोसके लखि तासों जो किय मनविश्वास ४० रानीको समुभाय के लीजे बिप्र बुलाय ॥ सामग्री मँगवायके दियो विवाह कराय ४१ जब विवाह ह्वै चुक्यो भयो रङ्ग मङ्गल चौर ॥ बहुरि वैश्य कनेतासुको गहवतायो चौर ४२ कछुक दिवसमें तेकहे निजतिय सों यों बैन ॥ देखें अपने देशको बहुदिन बसे सुखेन ४३ ॥ चौपाई ॥ बहुत दिवसयहँ बसे बहुत सुख हमने पायो। देखो अपनो देश यही मन विश्वसायो ॥ जाय सिखाय धाय विदा तब तानें कीनी। द्रव्य दई बहु लाष सँग दासीकरि दीनी ४४ ॥ दोहा ॥ जबै नृपति नें तासुकै विदा कियो सुखपाय ॥ कछुक दूर वैनाव कै बोल्यो यों चितचाय ४५ ॥ मोतीदाम छन्द ॥ अहो नृपतितनया सुखदाय। कहौं इक बात सुनों चितलाय॥ बड़ो डर है बन के मगमें। कहूं हो यनहाँ सभरे जगमें ४६ इहतें गहनो सब दीजिय मोहिं। कहूं यु चिगात तें मारत तोहिं ॥ दिये गहने तेहि तादि छिनताहि चली संगतासुकेपंथनिहारि ४७ ॥ दोहा ॥ दासीको तिनमारिकै नाम कूपमें डार। बच्यो गयो निजदेशको कीने हर्ष अपार ४८ तिहि मारग आय पथिक दुःख सुनी अप्राण। कहु न लग्यो बनमें कोउ कूक स्यो आँसके साज ४९ बहु बिचारिकै पथिक वह गयो कूपके पास। काढ़िता सुनें कामिनी कीनों बचन प्रकास ५० कहो बालकौने दियो तुम्है कूपमें डारि। कहानाम हैतातको कहो सत्य निरधारि ५१ के अशुभ कोपु चिका चोरन लीन्हो घेरि। दासी हनि भूषण लये अरु हिंगयो कूप में डारि ५२ यों बट सों की सा पलै पहुंचायो तिहि गेह। निरखत ही पितु मातु के उरमें उपजानेह ५३ कहो कियाबन कों सकल कछु कदु रायो भेष। भली भई दुख नहिं गयो की न्ही कृपा महेश ५४ बहुत भांति धीरज दियो कही पुत्रिका बाल। मिलि है पतितेरो बहुरि जिय जिन को य बिहाल ५५ ॥ पद्धतिछंद ॥ यह साधपुच निजगेह जाय। खेलन लाग्यो नित जूं सेवाय ॥ नितकारत बेगमनक कूर। रस्तो पापतासु के देहपूर ५६ ॥ मोदक छंद ॥ इहि भांति कछू दिन बीतिगये। तिहि देशमें दुःख अनेक भये ॥ तिहि पासतें दौलति जाति रही ॥ मनमें निश्चै य रीति गही ५७ ससुरारिको बेग चलौं चहिये। तिनसों अब जायकै यों कहिये ॥ यह ठानि हियें तिहि देश गयो। वहि आवत तिय नेता-किलयो ५८ ॥ दोहा ॥ कही सामुहे आयकै अतिडरपौ निजचि-त। कहियो चोरन ने सकल हरो हमारो बित्त ५९ दासी डारी मारिकै कूपहि मलीडार। मोहिं संग अपने लयो दीने दुःख अपार

६० यहकहिकै बहुँहोंरहो नितप्रतिभोगैभोग । एकदिवसकी
बातयहसुनौदैवकेयोग ६१ भूषणसाजे सकलतन मृगनयनी बर
बाल । आईपतिकेनिकट बहु धारेरूपरसाल ६२ यौंवनकियोपति
केनिकट गईमिथ्यागुणग्राम । तिहिमतिमंदगँवारने हनीबापकी
बाम ६३ ताहिमारिभूषण सकल लेकरिगयोसदेश । बहकहि
केमयनाकहन लागीबचनबिशेष ६४ पुरुषजातिऐसीकठिन सु-
नुहुसकलभुवपाल । निजनयननदेख्योसकल जोकछुकरैहवाल ॥
६५ ॥ गीतिकाछंद॥ यहबचनसुनिकेनृपतिने पुनिकीरसोंऐसेकही।
कहितोकथाबरआपनी सोजोहियेमधिबसिरही ॥महराजसुनिये
देशकंचनपुरसुनामबखानिये । तिहिमध्य सुसामरदत्तधन पतिप
तुरबुद्धिप्रमानिये६६ ॥तोमरछंद॥ ताकोसुयोतश्रीदत्त। शुभगुणन
में संयुक्त ॥ पुनिनगरकंचनमाहि । इकसेठबीरसुबुधि ६७ ताके
जयश्रीनाम । कन्यासरूप ललाम ॥ श्रीदत्तकोसोबाहि । दी
न्हो बणिकनेव्याहि ६८ सोगयोकुंवरबिदेश । करिकै बणिक
कोभेश ॥ यहभईतरुणसुबाल । सबभईकामसुहाल ६९ पुनिस-
खीताकेएकसो चतुरमतिसबिबेक ॥ तासोंकही उनबात। बब
योहीं बीतीजात ७० बहकहिअटारीमांभ । सोगईलखिकै
सांभ ॥ तिनलख्योपुरुषअनूप । अनुकाम कोहैरूप ७१ बोली
सखीसोंबैन । यापुरुषकोलखिनैन ॥ यासोंबचनयेभाषि । पुनि
गेहआनैराखि ७२ ॥ दोहा ॥ योंकहि वाहीपुरुषकोपठयो
सखिकेगेह ॥ आपुसुचितऊहदेहते आईकरिकैनेह ७३ परम
प्रीतिसेदुहुनने करंपरस्परभोग। बीतेबहुदिननेहमें करतसुखद
संयोग ७४ ताकोपतिआयोतहां करिकैबहुव्योपार। निरखतही
भतारकोकीन्होंकोपअपार ७५ गईअबैपतिकेनिकट बनयी
सहितसकोप॥ जायनिकटह्वैमलिनमुख रहीमानकोरोप ७६ सो
आयोपरदेशते अमितहतासबगात॥ सोथोअतिआनन्दमें कहीन
तासोंबात ७७ यानेजानीनींदमें गयोअमितवहसोय ॥ चलीमित्रके
गेहको चिततेदुबिधाखोय ७८ मिल्योराहमेंचोरतिहि गयोतासु
केसंग॥ ताकोमित्रसडेहमेंडसिकरलियोभुजंग७९ईजानीवहनींदमें
मिलीतासुसोंधाय॥ लिपटगईआनन्दमें अपनेचितकेचाय ८० दे-
खतताकेचरितकोचाव्योएकपिशाच ॥ सोउनकभोमैनके बुरीबिरह
की आंच ८१ पैठ्योताकीदेहमें मृतकपरयोजोबीर ॥ कहितासों

औढ़ाअमित काटीनाकसघोर ८२ अवतरुधिरसखिपैगई तासों
कहाअनाथ॥ कहाकहाअबकीजिये कहाकहोंसमुझ ८३ जोलौं
आपतिकेनिकट उपैनदूरजहोय ॥ अतिविहलह्वै भवनमें कहियो
ऐसेरोय ८४ ॥ गीतिकाछंद ॥ अतिकरिकुलाहलरायके तिनदीन
वचनसुनायके। मातापिताकेसामुहे तिनकहीऐसेआयके॥ काटी
हमारीनाकपतिने कहोकहअबकीजिये। सुखदायप्यारेहालके अब
दयउपायकोदीजिये ८५ ॥ पद्धतिकाछन्द ॥ यहिभांतिअनेकनकरि
उपाय। तिहिनखिकलिखेपत्र देवलाय॥ ताकोपठायदियराजपास।
मिटिगईतासुकोजीवआस ८६ ॥ दोहा ॥ पूछोनृपतावणिकसों
कीनकियाउमकर्म ॥ धर्ममार्गकोछांडिकेसुखकैसकियाअधर्म ॥ हि-
तोनप्रतिउत्तरनृपहि कुमतिकियमहिपाल॥ यहांसेयहिलेजायके
शूलीदियोउताल ८७ आज्ञापावनरेशकी संगचलेतैताल॥ दई
दुहाईचोरनेकीनेवचनप्रकास ८८ वणिकपुत्रकादोषनहिं मैंनिज
दोषबखानैन॥ सुताशाहकीदोषयुत गईआरकेऐन ८९ ॥ तोमर
छंद॥ सोजारमतकसमान। हुइरह्योअपनेथान॥ तिहिकरीनाका
भंग। मैंलख्योसकलप्रसंग ९० येसुनतनरपतिवैन। पठयोसाहूतसुचै
न ॥ माघाशाईमँगवाय। दियसकलसभामझाय ९१ कह्योरबात
समाय। सुनियेनृपतिचितलाय॥ जाकरखोटाकर्म। तिहिकनतयह
नृपधर्म ९२ योंकहीयुक्तनेबात। सुनिनृपतिभ्रूतखिदात॥ ऐसी
कुकर्मनिनारि। लिखिलेऊचित्तबिचारि ९३ जाकरेदुष्टप्रसंग। सो
लखऊमतिकोभंग॥ सोलहतहेबडदुःख। नमिजातसबरेसुःख ९४ ता
बामकोयहहाल। योंकियोहेभुवपाल॥ तिहिकोरकर्मकराय। खर
पीठदियाचढ़ाय ९५ फेरोनगरकेमधि। जिवसकलकारजसिधि॥
नृपपुत्रकोइमान। जिमचोरकोसनमान ९६ ॥ दोहा ॥ पूछोपुनि
बैतालने विक्रमसोंयहबात ॥ अधिकपापकाकोभयो कहोसुमति
अवदात ९७ कहविक्रमनरपालतब भयोबामकोपाप॥ रहतपुरुष
केधर्मउर मिटतनपापनताप ९८ भयोजायकेसिरसतत बहुरी
रीतिवैताल ॥ ताहिभांतिविक्रमनृपतिपुनिचलतभयोउताल ९९ ॥

पाँचवीं कहानी ॥

दोहा ॥ कहवैतालराजासुनऊ कहतकथानिकुवैन ॥ नगरअग्रा

सुखकरनसुखैन १ ॥ मधुभार ॥ सुनियेनरेश। मम
चित्त। यहमानिमित्त २ ॥ तोमरछन्द ॥ उज्जैन
पमहाबलधाम ॥ सोकरैतहंकोबास। तिहिदूत
इकहरिदास ३ ॥ गीतिकाछन्द ॥ तादूतकेएकसुतासुंदर परमगु-
णनिउजागरी। जबभईब्याहनयोगसाईं मातुपितुचिन्ताकरी ॥
सोकहैकन्यामातुपितुसों तातथइसुबिलोजिये। जोजानबिद्याबेद
बिधिसोंतातमोंहित्यहिदीजिये४ राजापठायोदूतदच्छिणपासब्दप
हरिचन्द्रके। लायोकुशलतुमजायह्वांकी नशेसबदुखद्वन्दके ॥ पहुं-
च्योनृपतिकेपाससोबर भूपजायपठादयो। सोरह्यो ह्वांहीनृपतिके
ढिग अधिकचितसुखपाइयो ५ ॥ दोहा ॥ तबपहुंचीनृपनेसुनीबात
एकहरिदास ॥ सत्यकहोमोसोंसुमति कलियुगकोकहबास ६ कहे
बचन हरिदासने सुनियेबचनबरेश ॥ ब्यापिरह्योकलिकालजग
पुरयरह्योनहिंलेश ७ कहतबचनमुखपरमधुर हियमेंराखतद्वेष ॥
द्वजोफलनहिंदेतहै करतअधर्मनरेश ८ यहसुनिनृपमहलहिगयो
यहबैठोनिजधाम ॥ इतनेमेंद्रकबिप्रसुतआयोमांगनदान ९ कहो
बिप्रकहचाहिये करियेबचनप्रकाश ॥ तानेकन्यातासुकी मांगीस-
हितहुलाश १० यानेयोंउत्तरदियो जोजानेसबज्ञान ॥ ताकोक-
न्याआपनीदीहौकरिसनमान ११ इनहूनेगुणआपने दिखराये
तिहिबार ॥ स्यन्दनइकमैंनेरच्योतामेंइकनिरधार १२ स्यंदनद्विज
येप्रातगहलयोतियकीआस ॥ दउचढ़िताप्रेचतुर पहुंचेजायअ-
वास १३ ताहीपैकोउऔरद्विज आयोताकेगेह ॥ तानेद्विजकेपुत
सों मांग्योयहीसनेह १४ द्विजकीपत्नीतिनहु रिमांगीयीब्यहुऔर॥
ऐसेतीनोंबिप्रसुत तबाभयेइकठौर १५ चिन्ताकिबहरिदासनेकी-
जियकहभगवान ॥ इककन्याबरतीनहैं कैसेनिबहैबान १६ ताहो
निशिकेसमयमेंराक्षसइकतहंआय ॥ कन्याकोलैगबोबिन्ध्याचल
चितचाय १७ असंबरपवहैबुरो लखौगुणीजनलोग ॥ अतिसरूप
भैसीकहा बनकेदुःखनयोग १८ दियोदानबलिनेअतिहि छल्यो
आपहरिआय ॥ कियोगर्बदशशीशने दीन्होंमूलनशाय१९॥मोदक
छंद ॥ जबलखीनाहिंकन्यासरूप । तबछायोमुखपरकुरूप ॥ ज्यों
पायतुषारहिममलमाश । त्योंभयेबिप्रमनमेंउदास २० तबलिये
तीनिहूंद्विजबुलाय। हरिदासप्रश्नकियचित्तचाय ॥ तुमकहौज्ञान
अपनोबिचारि। हरिलैगोकीबइकुमारि २१ इककहत्रिकालज्ञान

सोंबचनएह। सुनिलेउवचनतुमकरिसनेह ॥ लेगयोनिशाचरतुव कुमारि। परवतमेंराखीयहविचारि २२ ॥ दोहा ॥ कहीदूसरे बातयहमारिनिशाचरखर्व।लाऊंपुत्रीजायतुवशोचहरौसुनुसर्व २३ बहुरितीसरेनेकह्या। स्यंदनहमरालेहु ॥ आगौद्विजकीपुत्रिका ह-निनिशिचरकरितेहु २४ मारानिशिचरआयउन लायोसंगसो बाल ॥ गुणतिहुंनकोअतिभयो सुनुविक्रमभूपाल २५ काकोवह पत्नीभई कहुमोंसोंसबबैन ॥ प्रत्युत्तरविक्रमदियो सरसहृदयसुख दैन २६ जोलायोहनिराक्षको ताकीहैवहवाम ॥ कियोसहायदो-हुनने हूनकीन्होबडकाम २७ ॥

अथछठी कहानी ॥

पद्धतिकाछन्द ॥ पुनिकहबैतालइकबचनसाज। सुनिविक्रमगयो सुखहिकाज ॥ इकलसतधर्मपुरभूमिमद्धि । तहँधर्मशीलराजासु-बुद्धि १ ॥दोहा॥ तानृपकेमंत्रीसुघर अन्धकताकोनाम ॥ राजासों तिनयोंकही नृपकीजैयहकाम २ देवीकेस्थापिये काहूमन्दिर बीच ॥ यहसुनिनृपमन्दिररच्यो सकलग्रहनकेबीच ३ पूजनकिय बिधिवेदकेदोनोंबिप्रनदान॥नृपप्राकेपूजनबिना करैनहोंजलपान४ इहबिधबीतिबहुदिवसकरतदेविकोसेव ॥ राजासोंमंत्रीकह्यो बचन सहितअहमेव ५ ॥ तोमरछन्द ॥ नृपकीजियहकाम। सुतमांगिये अभिराम॥यहसुनतबचनभुआल। गयोदेविपरततकाल ६ बहुभांति पूजाकीन। करजारिकेकरिदीन ॥ नृपकीनस्तुतितासु। तिहुंलोक पूजैजासु ७तुअकरतिजगकेकाज। सबसुरनकीशिरताज ॥ जबपार देवनभार। तबह. कियाउद्धार ८ इकपुत्रमोकोंदेहु। करिकैहिये मेनेहु ॥ भइगगनबानीस्वच्छ। सुतहायगाप्रत्यक्ष ९ पुनिकरीपूजा राज। मनकेभयेसबकाज ॥ पुनिआइयानिजगेह। भइप्रेमपुलकित देह १०कछुबीतियाइमिकाल। नृपकरतराजसुचाल ॥ भयाभूप केसुकुमार। मनुइन्द्रकांतिसुधार ११ पुनिकरीपूजादेवि। सबभई पूरीसेवि ॥ बिक्रमसुनोइकहेत। इकरजकमित्रसमेत १२ आवतहुतो नृपदेश। अतिकियेनिर्मलभेश १३ तिहिपरामन्दिरदीठि। प्रण मन्तिकियमतिईठि ॥ त्योंलखीसुंदरबाम। भयोरजकमोहितकाम

१४ लखिदेविमन्दिरआय। करजोरिकैसिरनाय ॥ यहमिलैकन्या
मोहिं। निजघिरचढ़ाऊंतोहिं १५ यहकहिगयानिजगेह। भइबि-
रहव्याकुलदेह ॥ लख्योरजकपितुनेपुन। लियेसाथत्राकोमित्र १६ ॥
सोरठा ॥ गयेतासुकेगेह जाकीकन्यावहहती ॥ बोल्योबचनसनेह
कछुयांचनआयोंइहां १७ दीन्हेंतानेआव बहुतहमारेहोबड़ो ॥ दे
हौंतोंहिस्वभाव कहहुसबअपनीकथा १८ ॥ दोहा ॥ बचनसुनिजब
वहभयो तबउनकर्योसनेह ॥ मेरसुतकोतूसुता जोरिब्याहकरिदेह
१९ इनहूंबचनप्रमाणकरि शुभदिनलगनधराय ॥ बोलिरजककेपुत्रको
दीन्हीगांठिजोराय २० पुत्रवधूकोसाथलै आयोअपनेगेह ॥ रहन
लगेआनन्दसों तिययुतसहितसनेह २१ एकसमयत्रारजककेभयो
कछुकशुभकाज ॥ न्यातोआयोसुताको चलीसंगपतिसाज २२
आयामन्दिरकेनिकट आइपिछलीसुधि ॥ बढ़ोधाममैंनेकरग्रा
रहीनमनकछुबुधि २३ यहकहिकैअस्नानकरि मठकेभीतरजा-
य। दियासुझानअघोमपै गिरीधरणितलआय २४ देख्योताके
मित्रने परयोधरणिमेंशीश। कीन्होंचित्तबिचारियह कहाकियो
यहईश २५ ॥ गीतिकाछंद ॥ संसारअतियहकठिनदेगो समुझि
चितचिन्ताकरी। लैखड्गतानेशीशअपना काटिधारयौताधरी ॥
इहमरेमन्दिरबीचतब वहवामनेशोच्योयही। कहँगयेदोनों
छांड़िमाको हृदययहठानीसही २६ ॥ तोमरछंद ॥ तबवाम ढूंढ़न
जाय। देख्यौसामन्दिरआय ॥ तहँमरेदेखेदोउ। मनमेंबि-
चारयौसोउ २७ संसारकी यहरीति। समुझेनकोउप्रीति ॥ सब
जानिहैं यहबात। इनकरानाअपघात २८ वैवाममारेदाव। अब
खड़ोरोवति जाय ॥ मनमेंजोऐसी ठानि। मरिबेकोमनमेंआ-
नि २९ तहिजायसरवरतीर। मज्जनकियोमतिधीर ॥ फिरिआय
देवीपास। नायोसोमायोतासु ३० वहखड्गलैकरहाय। काटनचहै
निजमाथ ३१ गीतिकाछंद ॥ उठितबतसदेवीनेपकरी भुजायाकी
धायकै। मैंभईहूं परसन्नतापै मांगुवरचितचायकै ॥ तूभईहैपर-
सन्नमापै मांगुवरमनभायकै। जोपरेदोनोंमरेभूतल इनहिंदेहि
जिवायकै ॥ देवीगईपातालको लाईसोअमृतधायकै। वासोंछ-
हीतुशीशइनकेशीघ्र धरपरजायकै ॥ देवीनेछिड़कोयाहिं अमृत
उठेमानोंसोयकै। बाहमभागरनेलगेदोनों बामकोमुखहेरिकै ॥
दोहा ॥ शीशजोरतिकेसमय यहइलिगयोहैतात ॥ राजकौनकीबाम

भई मोसोंकहिसबबात३१तबराजाबोलोबिहँसि सुनहुबीरबैताल॥ तोसोकथापुरातनी कहिहौंसोततकाल ३२नदियनमेंगंगाउचित मेरुनमाहिंसुमेर। द्रुमनमेंतरुकल्पहै अंगनमेंशिरमौर ३३ जिस धरपैवहशिरचक्यौ ताहीकोवहनाम। यहसुनिकैबैतालनेलयो हैतरुकोधाम ३४ ताहीछणबैतालतब लटक्योतरुपैजाय॥ ताहि बांधिकेलेचल्यो अपनेचितकंचाय ३५

सातवींकहानी॥

दोहा॥ फिरबोल्यैबैतालतब सुनुराजाएकबात॥ चम्पापुर एकनगरहैचम्पकश्वरनाथ १ रानीनामसुलोचनाताके तनयाएक॥ त्रिभुवनसुन्दरिनामत्यहि रूपशीलगुणनेक २ मुखसमान शशिकेलख्यौ बालघटासमजान॥ चक्षुमृगासमजानियेभृकुटीधनुष समान ३ नासाकहियेकीरसम गलाकपोतसमान॥ दाड़िमदांत प्रमानिये अधरबिम्बफलजान ४ करपदअतिकोमलसुखद चम्पक बरणप्रमान॥ शशिकोसीकिरनीबढ़ै बामरूपगुणमान ५ जोदेखै याकूपको मोहिजाततकाल॥ छुटैध्यानतपसीनको गुणश्रौरूप विशाल ६॥ तोमरछंद॥ मातापितालखिबाल। चिन्ताकरी ततकाल॥ बरढूढियाकोलेय। करिब्याहताकोदेय ७ सबने खबरिश्रसपाय। तसबीरसकलबनाय॥ सोदईसबनेसाथ। भूपदईबेटीहाथ ८॥ चौपाई॥ सबकीप्रतिमादेखीजाने। चित में धरीन एकौताने॥ ताछणश्राये बालकचारी। तिननेकह्योगुण सकलबिचारी ९ यहसुनिराजा अतिभयमाना। चारौरूपशील गुणमाना॥ इनमेंदेऊंसुतामैंकाको॥ भ्रमबशभयोमनोरथयाको१० इनकोगुणसबसुताकेश्रागे। जाहिरकरोभूपतिभयत्यागे॥ सुताधर्म सोंचुपह्वैरही। तबबैतालभूपतिसों कही११ राजाकहो सुनौबैताल॥ एकशूद्रहै बचनरसाल। दूजो बसपतिजोहिजऐना। श्लाचोयोगसुताममबैना १२॥ दोहा॥वाकेयोगसुतावहभूपसों देहिबिवाहि॥ यहसुनिकैबैतालतब तरुपैपहुंचोजाहि १३

आठवींकहानी ॥

सवैया ॥ नृपविक्रमकोबैतालतबै इकबानीअनूपमऐसीसुनाई ।
मिथिलानगरीसबतेंअगरीबगरीजहँसंपतिकीअधिकाई। तहंराज
गुणाधिपभूपकरै बरकीरतितासुकीसिंधुलौंछाई। धर्मसोंपूरिरही
पृथिवी सबसु:खप्रजाकोनदु:खदेराई १ ॥ भुजंगप्रयातछंद ॥ तहां
एकभूपकोपुत्रहैआयो । महाशूरवीरोबड़ानामपायो ॥ चिरम
देवताको लसैनामभारी। बड़ोधर्मकर्मी महायुद्धकारी २ महा-
राजकेद्वारसो नित्तआवै । नहींभेंटताकीसोतौहानपावै॥ जितो
द्रव्यलायौतितोबैठिखायौ । महाविभ्रमा तासुकेदेहछायौ ३
दिनाएककीबातहै भूपभारी । महाराजआखेटकीन्हीसवारी॥
भयोसाथमेंभूपकोसंगताके । चल्योसंगमेंपांयजाकेनथाके ४ सबै
सेनसेभिन्नराजाभयोहै।लग्यौअश्वकेसाथमेंजैगयोहै॥कहैराजतासों
अरेकौनतूहै महाराज मोसोंसुनोबातजोहैपूतबैअश्वठाढ़ोमहाराज
कोनौं। कह्योंक्योंभयोतूहतोअंगगछीनौं ॥ महाराजमैंआपकेपास
आयों। कछूबातऐसोसमयनाहिंपायों ६ नहींदोषजामें कछू हेतु
म्हारो। महामंदहैभाग्यराजाहमारो॥महाराजजैषष्टमातेंबरोहै।
सुनोमैंकहौंनाहिंकाहूदुरीहै७ ॥ दोहा ॥ दुष्टजननकोसंगअरुविन
कारणकोहास॥ करैविवादनवामसोंकरैतौमलविनासट्खामोक्ष-
पयन सेइयेवाहनखरनहिंलेहु॥ तजिसरवानीजैविनीतामेंचितनहिं
देहु८ बहुतगतेअरुन्यायकी राजाकोसमुभाय॥ परस्वामीसेवाकिये
मिलैतुरत फलआय१० भयोविभक्तितराजतहं कह्योतासुसोबात॥
लावककूभोजनलियेकरिकैयतनसुतात ११ ॥ तोमरछंद ॥ यहब-
चनजियमेंधारि । इकलियोमृगकोमारि ॥ प्रज्वलितकरके आ-
गि । तिहिमासदीनोंपागि १२ नृपकोटपितकरियोइ । गृह
लायहुसंगसोइ ॥ पुनिनृपतिगृहमें आय । कियभृत्यचितकेचाय ॥
१३ इकदिवसनृपतिबुलाय। कहिबातचितकेचायँ॥जाओउदधि
तटबीर। करिकाजआवहुधीर१४सागयोजलनिधितीर।इकलख्यो
कौतुकवीर।देख्योसुदेवीथान।पुनाकरीसविधान१५॥गीतिकाछंद॥
तहँतेकढ़ीइकबामसुन्दरसकलतनभूषणसजै। सबरीनिपुणतामनहुँ
विधिकीनिरखि मनमन्मथलजै ॥ पूछनलगीसौपुरुषसोंयह कौन
कारनपगदियो । इनकहीआयोकाम अपनेनृपतेंरवधकियो १६
जोकरयौचाहैमोहिंपतीकुण्ड जायन्हनाइये । जबन्हायआवैपास

केरेतबसो हमकोपावृये॥ यहसुनतलाड़ीकुरङ्ग पङ्छयो न्हाय हित
तामेंधस्यो । सो आयनिकस्योदेष अपनेसुखदअपढिगसोलस्यो
१७ यहलख्योतानेबड़ो अचरजकह्योअपसोंआयकै । यहसुनतरा-
जाकहीमैंङ्गलख्यो नायलजायकै॥ कहिकैमँगाये अबुदोनौं संग
वहअपसुतलियो ।बड़लायअपनेचित्त आनँदगमनतायलकोकियो
१८ ॥ दोहा ॥ पङ्छयोअपसागरबिकट निरखीसोईबाम ॥ स-
खीएकसंगमेंलियेबोलीबचनसकाम १९ बोमोहिंयाद्वादीबिये
करङ्ग सोबचनप्रमान ॥ कहीअपनिमोंभत्यसंग करि बिवाहसुख
दान २० तिनफिरयहउत्तरदियो मैंतुवरूपअधीन ॥ कैसेयाङ्ग
भृत्यकोकहत्अपबचनप्रबीन २१ तबतुआयराजाकही सउजबआने
बैन ॥ करतसत्यजोआयतथ दुखअबवतिहैचैन २२ करिबिवाहगं-
धबतबदोकुलीनेसाथ ॥ आयोअपनेराजमेंकरिमनकाजसनाथ २३
तबपछीबैतालने सुनुबिक्रमनरनाह ॥ अधिकसत्यकाकोभयोस्वा-
मीसेवकमाह २४ राजातनउपकारहित धरतसुनङ्गबैताल॥ताते
सतसेवकअधिकसुनुममबचनरसाल २५ सुनतबचीतकजायकेताही
सखाबैताल ॥ बांधिताहिबिक्रमअपतिचलतभयोउत्ताल २६ ॥

नवींकहानी ॥

तोमरछंद ॥ पुनिकहत बचनबैताल । इकमदननगरसुचाल ॥
तहंबीरबरकरराज। सबप्रजासुखकेसाज १ तहंहिरनदत्तसोनाम।
सबबणिकधनकोधाम॥ त्यहिपुत्रिमूरतिकाम । हैमदनसेनानाम
२ इकदिवसप्रियसुखसाज । बरसमबलखिरतुराज ॥ निजसंग
सखियनलीन। जेसकलगुणनप्रबीन ३ सोगईअपनेबाग । तहंजाय
सुखदतड़ाग ॥ तहंसोमदत्तनरेश ।मंत्रीसहितशुभभेष ४ आयो
लखनआनन्द । सोरूपराकाचन्द ॥ तिहिलखीराजनुमारि ।
तबमनसुबुद्धिबिसारि ५ मोहितभयोसोंतात । कहिमित्रसोंयह
बात ॥ जोकामबिलिहैमोहि । ममजियनतवहोंहोहि ६ यह
कहतब्याकुलभाय ।अपकोसताढिगजाय॥ तिहिहाथमें दैहाथ।
बोल्योबचनअपनाथ ७ जोकरैमोसोंप्रीति।तौहोहितेरीजीति॥
जोतबैप्रीतिसुबान । तौत्यागिहौं मैंप्रान ८ बोलीसोराजकुमा-

रि । यहबचनन्टपहियधारि ॥ जोत्यागिहैतुप्रान । तौपापहोय निदान ९ सुनियेबचनचितलाय । दिनप बबीतिराय ॥ मेरोसुब्याह निदान । ममबचन करहुप्रमान १० मैंआयहौंतोपास । जिनि होहुचित्तउदास ॥ यहकहिगईनिजगेह । भइन्टपतिब्याकुलदेह ११ ॥ दोहा ॥ दूतन्टपसुतनिजगेहमें आयोमंत्रीसाथ ॥ बिनाकाम मनचलिगयोन्टपतनयाकेहाथ १२ ॥ तोमरछंद ॥ जबभयोताको ब्याह । केहुन्टपतिसंगउछाह ॥ पुनिगईताकेगेह । पतिसोंब-ढ़ायेनेह १३ सोगईपतिकेपास । कहिबचनसहितहुलास ॥ जब करगह्योन्टपनाथ । तबजारिबोलीहाथ १४ सुनियेबचनमहराज। मैंकियोंएककुकाज ॥ सोईकथाप्राचीन । कहिन्टपतिसोंपरबीन १५ हूनसुनतसहितहुलास। कहीजासुवाकेपास॥ यहसुनतहीचलि बाम । जाकोसहायककाम १६ ॥ दोहा ॥ चलीबामताठौरको गयेनिशायुगयाम ॥ मगमेंचोरनआय कैरोकीसहितसकाम १७ बोलीतिनसोंबचनये मतिकरभंग सिंगार ॥ फिरतसमयमेंदेहुंगी भूषणसकलउतार १८ रह्योचोरतासत्यपैगईन्टपतिकेगेह। ताहि जगायोनींदसे बोलीबचनसनेह १९ कहान्टपति तूकौनहै आई हैक्यहिकाम ॥ देवसुताकैन्टषिसुताकैफनपतिकीबाम २० कही मदनसेनातबैएईबचनप्रकाश । सत्यबचनअपनो करनआईतेरेपा-स २१ कह्योसकलवृत्तान्तसो भयोबाटिकामद्धि । दियेबचनमैं तोहितबबिसरिगईकहसुद्धि २२ ॥ तोमरछंद ॥ यहसुनतबचनसु-बेश। उत्तरदियोसुनरेश ॥ निजपतिलखीतूनैन। मैंसकलसमुझत बैन २३ निजपतिसुश्रासनपाय । लैकामसंगसहाय ॥ आईसुतेरे पास। अबकरौपूरणआस २४ ॥ दोहा ॥ सोमदत्ततबहीकह्योप-रचियदुखकोमूल ॥ हरैप्राणधनतेजबलसमुझिनकीजैभूल२५यहक-हिसोमनरेशनेभेजीनिजपतिपास ॥ मारगमेंताचोरसों भेंटभई सबिलास २६ सुनिकेताकेसबचरितसत्यहियेमेंलाय ॥ बिदाकरी ताचोरनेमिलीसुपतिसोंआय २७ पतिसोंसबबीतीकथा दीनी सत्यसुनाय॥तौहून्टपतिनेनेहकछुकियोनचितकेचाय२८ पायहृदय मेंदु:खबहुबोल्योबचनउदार ॥ नारीपतिब्रतरूपहैबिद्यापुरुषसिं-गार२९यहकहिकैबैतालने कहेन्टपतिसोंबैन॥तीनोंमेंसतकौनको अधिकभयोसुखदैन ३० अन्यपुरुषरतजानितेहिपतिनेदीनोजा-न॥तातेसतभयोचोरको सुनुबैतालसुखदान३१यहसुनकेतस्थानपै

गयोबक्करिबैताल॥बांधिबक्करिविक्रमनृपतिसँगलैचल्यौछुताल३२ ॥

दशवींकहानी ॥

चौपाई॥ कहबैतालपुनि अद्भुतबानी । सुनहुनृपति बरमति
सुखदानी ॥ गौड़देशमधिबसएकदेशा । बर्द्धमानजाहिरशुभबेशा
१ गुणशेखरराजातहँरहई। मंत्रीतासु सरावगअहई ॥ अभयचंद्र
तिहिनामकुजाती । करैद्रोहद्विजसौं दिनराती २ तासुबचनमें
जबनृपआवा । सकलधर्मकर मूलनशावा ॥ नगरमध्यनिहिकरी
दुहाई । जोकरैबैष्णव धर्मसुभाई ३ तिहिनिकासिनृप देशहि
देई । सरबसुछीनितासुकोलेई ॥ सुनिकैप्रजापरमभैपावा। पुनि
मंत्रीकहबचनसुहावा ४ महाराज सुनियेममबानी। कहौधर्ममय
सुखकेखानी ॥ जोअधर्मरतपरधनलेई । अनतजन्मधरिसोतिहि
देई ५ कामक्रोधमदलोभअनेका। इनकरिवशधरिजन्मअनेका॥
ब्रह्माविष्णुरुद्रसबदेवा॥ मायभूमिकरबावतसेवा६ इनतेंगोधनअधि-
कसोराई । रागद्वेषमदरंचनभाई॥ तृणभक्षणकरिदिनअरुरा-
ती। अवतअमृतसमपयइहिभांती ७ कहँपपीलिकहगजपर्यन्ता ।
करत्जीवजगजीवसन्ता ॥ जोपरतनभक्षणजगमाहीं । निजतनकर
बढ़िवारिकराहीं ८ अन्तकालसोनर्कहिजैहै । सकलयातनायमकी
पैहै ॥ यहकहिसकलज्ञानसमुझावा । निजमतितिहिहियदृढ़सुक-
रावा ९ माननधर्मऔरहियराजा । आपनकहेकरैसोकाजा॥ काल
विवशसोभयउनरेशा । भयउअधीनतासुसुतदेशा १० धर्मध्वजतिहि
नामसुहावा। परमचतुर परजहिमनभावा॥करैधर्मसोजोनृपताई ॥
प्रजानदुःखपावजिमिभाई११ एकदिवसकरचरितसुहावा। अभैचं
दकरपकरमँगावा॥ औरकरायकुगतिकरिराजा । खरचढ़वायब
जायसुबाजा १२ देशनिकारिदीननृपसोई। मीचकुबुद्धिमंत्रतजो-
ई ॥ कीनद्रोहतिहिद्विजनकेरा सोफलपायउदुष्टघनेरा १३एकदि-
वससबरानीसाथा।लखनबाटिकागेनृपनाथा॥ गयेसकलजनसंगब
नाई। देखीतहांसुखदअमराई १४ बागमध्यसरएकसुहावा। सर
सिजप्रफुल्लितनिर्मलआवा॥तिहितटआसनसुखदबिछाई। बैठेनृप-
तितहांमनलाई १५ छोटिबसनसरनृपतिअन्हावा । तोरिकमल
रानीपगढावा॥ लागतासुकोचोटसुरानी । पगटूटेउमुखआवन

बानी १६ आयन्दपतिऔषधितिनकीन्ही ।सकलसुधारिबुद्धि बप दीनी॥ भईनिशाभा चन्द्रप्रकाशा । बिरहिनिदुखशोकुमुदनिहा सा १७ दूसरिरानीकोमलबोला । लखतचांदनीपरे उफफोला॥ ब- ऊरिगृहस्थीगृहतेराई। मूसरशब्दभयोदुखदाई १८ शब्दसुनतपु नितीसरिरानी। मस्तकखंदभयोदुखदानी ॥ मुर्छाखायगिरीभुव माहीं। धरीआपनीधिरतरबांही १९॥दोहा॥ यहकहिविक्रमसों कह्योवचनभक्तरिबैताल ॥ इनमेंकोसुकुमारिहै कहुबातोउत्ताल २०॥ सोरठा॥ जिहिमस्तकमेंघोर भईगिरीमूर्छितसुभुवि ॥ सुनु बैतालमतिधीर ॥ सोईअतिसुकुमारिहै २१यहसुनिकैबैताल जाय लब्योतरुपैबहुरि॥बांधितहिकरिख्यालबिक्रमसंगमेलैचल्यो २२ ॥

ग्यारहवींकहानी ॥

गीतिकाछंन्द॥ सुनियेनृपतिइककथापावन पुष्पपुरशुभग्रामहै करेतिहिकोराजबल्लभनीतिहीकोधामहै ॥ मंत्रीप्रकाशितसत्य ताकोतासुकीइकबामहै ।रूपमेंजनुइन्दिरासुनिलहिमताकोनाम है १ तिहिकहीरानीअधिपसों इकबातअतिसुखदायके ।जो भोगवैनहिंभोगसुन्दरिकामिनी कोपायके॥ ताकोअकारथजन्म जानोआयकैभुविकहकियो । योंकहिसुदेकेराजकोसबभारमंत्री कोदियो २ ॥ मोदकछंद ॥ तिहिभांतिअनेकनभोगकिये। मन केसबकारजपूरिलिये ॥ मंत्रीइकबेरसुगेहगयो। मनताकेमेमहादुख माहिंछयो ३ तबतासुकीबामनेऐसेंकही । हमसेवासमयकछुचूक गही॥ तबबामकोउत्तरऐसोदियो ।हमभोगतहैअपनोसुकियो ४ सबराजकोभारनरेशदियो। तहंव्याकुलताहिहरंगकियो ॥ निशि द्योसहिचित्तमेंबिसरहै। मनहीमनहोतननित्तदहै ५ यहबातसो बामनेफेरिकही। कछुतीरथकीहमचित्तचही ॥ अपसोंयहजायके लीजियजू। सबराज्यकोभारसोदीजियजू ६ यहठानिसोचित्तमें मंथलियो । तिहिराजकेपासकोगमनकियो॥ प्रनआगेभुआलकेखो लिदियो। नृपआयसुदीनप्रसन्नहियो ७॥ गीतिकाछंद॥ जइकै बिदातबचल्योतीरथ बामनिजसँगमेंलई। पहुंच्योउदधिकेपास सोईपुण्यमेंरतिमतिभई ॥ देख्योसमुद्रमेंख्यालअद्भुतएकतरुअद्भुत

बन्धो। तामैंमणिनकेपातलागेपुष्पपुखराजनिसन्थो ८ विद्रुमलगे फलतासुतवमेंदेखिमनविभ्रमकियो। छौन्योउदधिमनधनुवसुर-पंतिआपनेकरमेंलियो॥ तापरलसैएकसुघरबामसाकामपत्नीजा-जियो। करसोवजावतिवीनबाकीपुडिबंबलमानियो ९ देखतभई सोलोपबाकेतुरतगृहफिरिआइयो। ह्वै मध्यनृपकेआयसंमुखवचन सत्यसुनाइयो॥ जोलख्योयोनेचरितसगरोनृपतिकेआगेकह्यो। सुनिकेनृपति कोचित्तलोभो जानितिहि थलचितचह्यो १० राजमंत्रीसौंपि सिगरोआप त्यहिलोकोगयो। देख्योतहांसो सत्यकौतुकनिरखितनआनँदभयो॥ कूद्योनृपतिमधिसिंधुतमनाय केतिहितवच्यो। आयलसैंवहनाथकोवरसकलकंचनमैंमच्यो ११॥ चौपाई॥ पुनिपातालगयोतवसोई। कहतिनाथकोनृपसनजोई॥ व्यहिकारजयहँआवभुवाला। सोसनवचनकहौततकाला १२ नृप कहवचनरूपतवनारी। सोह्यामामनमोहनहारी॥ त्यहिलगि मैंआयउंतवपासा। पुजवहुसवमामनकोआसा १३ तवतिनउत्तर दियोविचारी। कृष्णपक्षकोचौदशिकारी॥ तादिनमोढिगरहउ जोराजा। तोपूजैसवमनकेकाजा १४ ॥गीतिकाछंद॥मानीनृपनेबात ताकोअवाहताकसँगकियो। आईचतुर्दशिदिवसकोदिननृपतिने यहकहिदियो॥ यहसुनतराजाचल्योजातेछिपतमोसोसबलख्यो। हूनलख्योनिश्चरसंगतिबकेजोचह्योमुखसाभख्यो १५ धरेपापीदुष्ट निश्चरजायगाकहंभागिकै। यहकहिदियोएकखड्गताकेगयोधिर तनत्यागिकै॥ यहलखतवोलीकामिनीतवकाजयहभारीकियो। नृप पितुकोआपमेरोसकलमनआनँददियो १६ कैसेभयोयहआप तोकोंसोकथासवभाषियो। लागोकहनसोतवैसुंदरिवचनयोंचित राखियो॥ भोजनकरतहापितामोसंगएकदिनकडुमैंगई। एकअ-सुरआयोपासमेरेआपकोयहगतिभई १७ ॥ तोमरछंद॥ यहकही नृपनेबात। चलसंगमेरेतात॥ पुनिजाबोपितुपास। यहवचनसत्यप्र-काश १८ लैसंगत्यहिनृपनाथ। त्रियनायशिरकोमाथ॥ आयेसोअ-पनेराज। सवपूजिवामनकाज १९ इकदिवसवोलीवाम। मैंजाहुँगी पितुधाम॥ नृपनेकहीमनलाय। पितुगेहवेगिसिधाय२०इनलख्यो पतिसोमलीन। त्यहिगवनरोकिसोदीन॥ नृपनेकहीयहबात। पितुगेहकोंनहिंजात २१ इनकहीपितुगंधर्व। मोहिंदेखिकरिहै गर्व॥ मैंमनुषकीहूंनारि। यहलेहुचित्तविचारि २२ सुनिदोनकी

यहबान। सुनिकढ़ेमंत्रीप्रान २३ सुनिपूछियोबैताल। बिक्रमकहो भूपाल॥क्योंहिकाजमंत्रीप्रान। कीनेहोसोसुबिधान२४यौंकहेबिक्रम बैन। बैतालसुनसुखदैन॥ नृपकरतभोगबिलास। तजिराजकीसब आस २५ सबप्रजादुखहिलीन। लखिभयोमंत्रीदीन॥ त्यहिकाज छांड़ीदेह। सुनिभेदकरिममनेह २६ यहसुनततरुपैजाय। लटक्यो सुवाहीभाय॥ नृपबांधिकैतिहिहाथ। लैचल्योअपनेसाथ २७॥

बारहवीं कहानी॥

दोहा॥ बिक्रमसोंबैतालपुनिकहनलग्योयेबैन॥ चूड़ापुरयक नगरहै सुनहुनृपतिसुखदैन १ चूड़ामणिराजातहां करैप्रजापितत राज॥ देविस्वामिताकोगुरू बिप्रनमेंशिरताज २ हरिस्वामीताको तनयसुंदरकामसमान॥ नीतिनिपुणपण्डितसुघरसुरगुरुपटतरजा- न ३ साकाहूद्विजकीसुताकरिबिवाहनिजसंग॥ लायोअपनेगेहमें बाढ्योप्रेमअनंग ४ एकसमयग्रीषम समय सोवतसोनिजगेह॥ उ- घरोहोमुखबामको सोलखिसहितसनेह ५ जातहुतोगंधर्बकहुंन- थनबिमानअरूढ़॥ सोलखिताकेबदनको मोह्योभतिकरिगूढ़ ६ लैबिमानमेंतासुकोगयाआपनेगेह॥ दृतजाग्योसुतबिप्रको भईबि बाकुलदेह ७ सकलगेहढूढ़तफिरो लखीनहोंकहुंबाम॥ छांड़ि सकलसंसारसुखभोयोगीप्रतिधाम ८ करतफिरततीरथगमन एक समयकहुंजाय॥ भिक्षामांगनगेहकिहुगयोहतोसुखपाय ९ लैभि- क्षासोबिप्रसुत गयोसरोवरतीर॥ आयोबटकेहेतर धरयोपात्र मतिधीर १० बटजड़तेएकसर्पकढ़िसुंध्योसोईपात्र॥ भयोहलाहल अन्नहपायोद्विजमतिग्रात्र ११ भूखहतो।जबअधिकतबखाईसोई खीर॥ खातचढ्योबिषसकलतन पहुंच्योगृहमतिधीर१२कहीजाय द्विजसोंबचनतेभिक्षाबिषदीन॥जातप्राणमेरेसुअबबड़ोपापयहकीन १३यौंकहिकेताकेतहांनिकसेतनतेप्रान॥ यहलखिकेद्विजबामनिज ताड़ितकरीनिदान १४ गृहतेदईनिकारिकै करिकेहियमेंरोष॥ कहिबिक्रमइनमेंभयोअधिककौनकादोष१५ प्रत्युत्तरबिक्रमदियो होतसोबिषमुखसर्प॥ नहींदोषकछुबिप्रको जोतनदीन्होअर्प १६ काहूकोनहिंदोषकछुसुनहुबचनबैताल॥ यहसुनिकैताहीतरहि चढ़तभयोततकाल १७॥

तेरहवींकहानी ॥

सोरठा ॥ कह्यौकहनवैताल सुनुबिक्रममतिकेउदधि ॥ सुनिये कथारसालमाथनदुखसंदेहकी १ ॥ चौपाई ॥ चन्द्रहृदयनगरीइक अहई । तहँरखचोरभूपवररहई ॥ तहांधर्मध्वजसेठिसुहावा सोभनिसुता तासुजगगावा २ यौवनरूपवतीवहनारी । सखिन सहिततिहिमधिउजियारी ॥ तिहिनगरीमधिचोरअपारा । कोन नपावतकछुव्यवहारा ३ सकलवणिकमिलिसम्मतकीन्हा । राजा मन्दिरकहपगदीना ॥ जायनृपतिआगेसबकही । जोकछुरीति बिथाउररही ४ सुनिकेनृपधीरजबहुदयऊ । रखवालीकोबहु जनकरयऊ ॥ तौहूंआयचोरदुखदेईं । हरिकैबणिकनकोधनलेईं ५ लखिकेचरितनृपतिहियहारा । आपजानकरमंत्रबिचारा ॥ बांधिमसकसबचितदृढ़ाई । बिगतयामनिशिगयोसोराई ६ दृष्टि नृपतिइकचोरसुआवा । मिलेपरस्परअतिसुखपावा ॥ हरषउभय होउमिलगयऊ । बहुतधरनतेसबकछुलयऊ ७ ॥ दोहा ॥ गयो संगलैनृपतिको चोरआपनेगेह । ठाढ़ोकरिनिजपौरिपर भीतर गयोसुतेह ८ दासीइकताकेहती आईकाहुकाज ॥ द्वारनृपति ठाढ़ोलख्यो बोलीवचनससाज ९ लखिकेतेरेरूपको आवतिदया सुमोहिं ॥ चोरआयअबगेहते नृपबरहनिहैतोहिं १० यहसुनिकै ताहीसमयनृपआयोनिजराज ॥ करीचढ़ाईचोरपैसैनाअपनीसाज ११ घेरिलियोताकोसुघरनृपअपनेसहजोर । हतोदेवताचोरकोनग- रीकोधिरमोर १२ गयोदेवकेपासवहसकलसुनायोभेव ॥ सुनतक्रोध करितासमय आयोत्योंहीदेव १३ ॥ तोमरछंद ॥ तादेवकोलखि रूप । मनमेंडरयोअतिभूप ॥ तिनआनि मारीसेन । सबदुखपरै कोउहैन १४ जैसेलखतमृगराज । भजिजातनागसमाज ॥ तैसे भयोनृपसोय । सबसुधिहियकीखोय १५ त्योंचोरबोल्योबैन । तोहिं लाजआवतिहैन ॥ रणमेंभजतहौभूर । त्यहिमातुमुखमेंधूर १६ यहसुनतकर्कशबात । बहुभयोक्रोधितगात ॥ करियुद्धभांतिअने- क । लियोबांधिचोरविवेक १७ लायोसुअपनेराज । ताकोसुबांधि समाज ॥ करिउष्ट्रपैआरूढ़ । दियदण्डकरिमतिगूढ़ १८ तबहु कुमतिजयमहराज । लेजाहुशूलीकाज ॥ त्यहिचलेगहिलैलोग । जोनाथशूलीजोग १९ ॥ दोहा ॥ तनयाकहुसेठकी सुनतचोर कैबैन ॥ आयचढ़ीनिजमहलपै ताकोदेखतनैन २० लखतचोरके

बीरताकोगयोहै। गह्योकामकेबश्यसोहूभयोहै॥ गिरयोमूरछाखा-
यकैभूमिमाहीं। रह्योचेतहूनैराजकन्याहिमाही ५ गईसंगलैकैसखी
गेहहीमें। रह्योचेतनाहींकछूदेहहीमें॥ यहांविप्रकेपुचसुदेविसार-
दे। परयोभूमिमैंधीरयबैंबाहधारे ६ तहांमूलवद्मवीधर्मीविप्रआयो।
हतोधामकेताविघातापढ़ायो॥ लख्योविप्रकोपुत्रवेहोशभारीदुहूं
चित्तमेंबातऐसीविचारी ७॥ सोरठा॥ मूलदेवयहबात कहीधर्मी
प्रियबंधुसों॥ क्योंयहदुःखितगात मारयोकामिनिमैनशर ८ फिर-
कितासुपैनीर ताकोदियोजगायकै॥ बचनकह्योपुनिधीर कहहुव
दुःखशरीरमें ९ कहियेतासोंपीर करैदुःखकोदूरिजो॥ व्याप्यो
कामशरीर मृगनयनीनयननहन्यो १० जोवहमिलिहैमोहिं सु-
नहुविप्रवरममबचन॥ सत्यसुनावहुंतोहिंतौप्राणनतेराखिहौं ११॥
दोहा॥ कहीधर्मीनेबातयह चलोहमारेगेह॥ जलवतावहुंतोहिं
कछु जासेरहतुवदेह १२ मूलदेवनेयहकही जोमांगेममपास॥ सोई
सबकरिदेहिंगे पूजेसबतुवआस १३ गयोदुहूनकेसाथवह व्याकुल
विरहशरीर॥ मृगनयनीभरज्यहिलगे सोधरकबहुंनधीर १४ गुट-
काहैतबबाँधिके मूलदेवद्विजराज॥ दीन्हेताकेहाथमें आछ्योमेरु
लहिसाज १५ जोगुटकाहूकमुखधरै तबयोबालाहोय॥ दूजेको
जोमुखधरे पुरुषबनैफिरिसोय १६ मूलदेवनेतासमय बालाताको
कीन॥ आपहुहवनिसंगले बपयूहमारगलीन १७ पहुंच्योहेरद-
वारमें लखिद्विजकियोप्रणाम॥ तिनहूंपढ़िकैश्लोकइक दियआ-
शिषसुखधाम १८ अहिकारणआवनकियो कहियेचित्तविचारि॥
तबबोल्योद्विजराजयह कपटहृदयमेंधारि १९ मेरेसुतकीकामयह
रूपगुणनकीराशि॥ आयोराजनपासतुव पुरवहुमेरीआश २०
नामहमारीऔरसुत गयोराहमेंखोय॥ तिनकोढूंढनजातहौं संग
लियाहनहोय २१ ढूंढ़लायहौंआपनेपुत्रवामनिजसाथ॥ तबयाकू
लेजावहौंसुनौसत्यनृपनाथ २२ राखिगयोनृपगेहमें पुत्रवनताकी
जास॥ आपआयनिजगेहमें कीनोपरमहुलास २३ राजानेनिज
सुताढिग राखीसोईबाम॥ यथबरहुमतिछांड़ियो कहदेहुमति
धाम २४ एकसमयनिशिकेसमयशयनकियोदुहुंसंग॥ कहीकथा
सबबागकी जैसेभीतिढंग २५ होयनिशामें पुरुषवहरहैदिवसभरि
बाम॥ करिभोगनृपसुतासँग पुजवैमनकेकाम २६ गर्भरह्योनृपकन्य
का चितमेंचिंताकीन॥ मंत्रीएहछद्मशहतो गईतहांपरवीन २७

निरखतयाकेरूपको मंत्रीसुतबेहाल ॥ सुन्दरिहीनहिंनेकतन ऐसो
भयोइवाल २८ ॥ तोमरछन्द ॥ निजमित्रसोंयहबात । कहिमंत्रि
सुतअवदात ॥ जोमिलेयहत्रियमोहि । तोजिवनमेरोहोहि २९
राजागयोनिजगेह । सकुटुंबसहितसनेह ॥ मंत्रीसुनेयेबैन । निजसुत-
हिनिरखिअचैन ३० नृपगयोसोततकाल । सुतकोकह्योसबहाल ॥
सुनिनृपतिसाधीमौन । यहबातनहिंकछुहोन ३१ यहधर्महैनहिंराज ।
रहैधर्महीसेलाज ॥ जगमेंपदारथधर्म । हैधर्महीतेकर्म ३२ बहुपुपपै
लखिकष्ट । हैरह्योमंत्रीमष्ट ॥ दियोअन्नजलकोत्यागि । सुतकेसनेह
मेंपागि ३३ ॥ दोहा ॥ महाराजमंत्रीतनय तजतभयाकमेंप्रान ॥ मंत्री
बिनसबराजको नष्टिहैकाजनिदान ३४ महाराजवाबिप्रको गये
बहुतदिनबीति ॥ कोजानैकहंहोगयो होतनचित्तप्रतीति ३५ तातें
ताकोदीजिये मंत्रीसुतहिबुलाय ॥ जोआवैतोलेहिंगे वाकोहम-
समझाय ३६ सबनेजबसमझायके कहीनृपतिसौंबात ॥ तबबुलायद्विज
कीबधू कहीनृपतियोंदात ३७ मंत्रीसुतकेसंगमेंकरतूभोगबिलास ॥
तबबोलीत्रियबचनबर सुनुनृपबचनहुलास ३८ जोभाखामैंदेहुंगी
सोईकरौप्रमान ॥ तोजाऊंयहगेहमें समझोबचननिदान ३९ प्रथम
जायतीरथकरो सकलसोपावनदेह ॥ तबजैहौंयहिगेहमेंकरकैया
सोनेह ४० मंत्रीकोसुतबोलिके कहेनृपतिएबैन ॥ सकलतीरथनजाय
तुमफिरिआवहुसुखऐन ४१ आयहमारेगेहयहजबहमतीरथनजा-
य ॥ गईतासुकेगेहमें बिप्रबधूसुखपाय ४२ तबप्रधानसुततीरथन गयो
सहितउत्साह ॥ इतयहताकीबामढिग अयनकियेचितचाह ४३
करतबातीप्रेमकी आपसमेंयुगनारि ॥ एकसखीबोलीसुन्योमारत
कामकटार ४४ जीरूपीपुरुषजो हुतोबिप्रसुतबीर ॥ भोगकियोता
संगतिनहितचितसोंमतिधीर ४५ ॥ षट्पद ॥ ऐसेदिनबीतिगतेतीर्थकरि
सोईआयो ॥ सुनीबिप्रसुतबात पुरुषबनिनिजग्रहधायो ४६ भयो
दुहुनकेपासजाययहबचनसुनायो । आयोमैंकरिकाजयतलयोंआयब-
तायो ॥ अबबेगिहफाऐसोकरो वहरहैनारिमोंसंगमें । मेरोजीवन
तनहै जबपरैअंगनहिंरंगमें ४७ सुनिकेदोउबिप्रबातयाकेमुखनीके ।
कह्योहुइएकपुरुषयुक्ता वहएकहिहोके ॥ चलेनृपतिकेगेहदुहमिल
कपटबेषधर । लख्योतिन्हैंमहराजजानिचितबेधनिप्रवर ॥ आदरतिन
कोअतिकियोलीन्हेंनिकटबिठायके । कुशलप्रश्नपूछनलगेत्योंहीनृप
सुखपायके ४८ ॥ दोहा ॥ बहुतदिवसपाछेयहां आवनकियद्विजराज ॥

कहियेसोईआपनो मोसोंचितधरिकाज ४९पुत्रवधूजोआपकीसौं-
पिगयोमहराज ॥ सोईहमकोदीजियेहोतहमारोकाज५०जोकछु
बीतीयोकथाकहीराजनेसोय ॥ सुनिद्विजवरअतिकोपकरिबोल्यो
सुखतेओय५१पुत्रवधूदीजैहमैंनातरदेहौंशाप ॥ राजाहूकैकपटकरि
महालेतहौपाप ५२ नृपतिडरगोद्विजशापतेजोकहिहौद्विजराज॥
सोईचितमेंधारिकैकरिहौंतेरेकाज ५३ जोडरपतममशापको अ-
पनीसुताबिवाहि ॥ करैढीलमतिमोसुतहि देउनृपतिचितचाहि
५४ राजाचितमेंसमुझिकछुलीन्हेविप्रबुलाय ॥ दईविप्रसुतकोसुता
ब्याहीचितकेचाय ५५ लेकरिकैनृपकीसुता आयेअपनेधाम ॥ आ-
पसमेंभगरनलगे कुटिलविवशह्वैकाम ५६ इतनेकहिकैबचनवर
बोलिउठ्योबैताल ॥ नृपतिवामयहकौनकी भईकहोभूपाल ५७
बोल्योविक्रमबचनयेभईशशीकीबाम ॥ भयोसभाकेमध्यमेंबरबिवाह
अभिराम५८॥ षटपद ॥ हतोगर्भमेंपुत्रनाहिं बधकाहूजान्यो । ताते
रानीपुत्रशशीकोनीतिबखान्यो ॥ यहभगरतहैव्यर्थकाज नहिंचित
मेंआनत सुनु बैताल बातमैं तोसें भाखत५९ यहसुनत बात बैताल ने
मारगपुनि तरुको लियो । बाँधि ताहि नृपसंग लै निज कारज में
चितदियो ॥६० ॥

पन्द्रहवींकहानी॥

गीतिकाछंद ॥ बैताल बोल्यो सुनहु राजा चरित यक सुनि-
लीजिये । पर्वत हिमाचल अच्छ भुवमें बैन साँच पतीजिये ॥ जो भूत-
केतु सुराजताको धर्म को अब करतुहै । चारो बरणसुखबसे ता बल
दुःख जगके हरतु है १ तप कियो ताने अर्थ सुतके कल्प तरु बरपै
गयो । बहुभांति पूजन कियोताको लखि प्रसन्न सुखी भयो ॥ बरमाँ
गिलयो चहै चितमें काज सोई होयगो । ह्वै है मनोरथ सकल पू-
रण दुःख मनको खोयगो २ जो कृपामोपर करीसुरतरु मोहिंइक
सुत दीजिये । जासों रहै मम काज निश्चल काजमेरो कीजिये ॥ यों
होयगी यह सुनत नृप चित अधिक आनँद में छयो । आयो सदन
में गये कछुदिन एक सुतताके भयो ३ जो भूत बाहननाम ताको प-
ढ्यो बिद्यन आयकै कछु गये वैसो पढ्यो विद्या परम चितसों चाव-
कै ॥ करी हियमें भक्ति शिवकी सुयश धरणी है लियो । सब काज-

कीने धर्महीके दान बहु बिप्रन दिये ४ इकबारतिनमेंजायसुखसों
कलपतरुसेवनकियो । वहभयोबहुतप्रसन्न तापैमांगितवइकवरलि-
यो ॥ मेरीप्रजाहैजितीभुवपैतिनहिंलक्ष्मीदीजिये । कोउदरिद्रीरहै
नहिंयहकाजमेरोकीजिये ५ वरपायआयोनगरअपनेप्रजाधनपूरी
भई । कोउनमानतअपनमनअघकोविपतिजोगतिनघिगई ॥ बंधुज-
नजेहतेअपके तिनहिंयहचितमेंधरी । लेयोवहीराजताको
कुमतिमेंतिनमतिकरी ६ यहसुनीजबसकलराजापुत्रजासुखदा-
यकै । जीतीव्यवस्थाकहीतासोंसकलसबसमुझायकै ॥ तिनधारि
लीन्हीधर्मचित्तमेंराजकोतिनकोदियो । हरिकेचरणमेंनेहकरिकै
गमनतपहितबनकियो ७ पहुँचेमलयचलजायपर्वतकुटीएकबनायकै ।
दोउपितासुतरहेतामेंचित्तहरिसोंलायकै ॥ तहँएकदिनचितनव
नृपसुतनेहइनमेंअतिभयो । दोउजगयेइकसंगपर्वततहँभवानीमठठ-
यो ८ तामेंलखीइकसुतानृपकीबीनकरमेंसोलिये । बैठीरिझावति
होभवानीदीठनीचेकोकिये ॥ तासोंनृपतिसेनेहयाकोदुहूंतनव्या
कुलभये । सकुचायतनयागईनृपकीइतसकुचसुतयेगये ९ ॥ मोदक-
छंद ॥ इहिभांतिसोदु:खमेंरातिकटी । जबहींरविकीकिरनैंप्रगटी ॥
नृपकन्यामन्दिरमांहिंगई । नृपकेसुतआनिकेसुधिलई १० ॥ सो-
रठा ॥ पूछीनृपसुतबात वाकीसखिसोंजायकै ॥ कहीसत्यअबबात
यहकन्याहैकौनकी ११ मलयकेतुकीबालमलयवतीयहनामहै ॥
नखशिखरूपरसालपूजनआईदेविको १२ कहियेअपनोनामकहां
बाससुतकौनके ॥ आयेइहांकिहिकामसकलकहौमोसोंकथा १३ ॥
गीतिकाछंद ॥ इनकहीअपनीकथातासोंजायउनरानीकही । ताने
कहीवहजायपतिसोंसुतावरढूंढौसही ॥ तानेकरीचितबहुतचिंता
पुत्रकोबुलवायकै । कहीलाबांढूंढ़िकेबरबहिनकारणजायकै १४
मैंनेकहीगन्धर्वराजाराजतजिआयेयहां । ताकेसुतहिकोबोलिला-
वोजोयपर्वतपैजहां ॥ मित्रावसुयेसुनतपितुकेबैनआनंदकेभरे । तुरत
हिगयोनहिंदेरकीनीचरणपर्वतपरधरे १५ नृपसोंकहीयहबाततातने
आपनोसुतदीजिये । हमहैहिंगेनिजबहिनवाकोसंगमेरेकीजिये ॥
यहसुनतहीसुतसंगदीनोराजघरकोआइयो । नृपनेदईहैव्याहि
कन्यापरमचितसुखपाइयो १६ ॥ तोमरछंद ॥ तहँकरिसुखापन
व्याह । आयेकुटीकेमाह ॥ लियनामसारोसंग । हैहियेपरमउमंग ।
१७ सोलखनपर्वतकाज । सँगनामआतासाज ॥ त्यहिलख्योअरिसि

सुठेर। पूछतभयोत्त्यहिबेर १८ ॥ गीतिकाछंद ॥ दूनकहीआवत गरुड़आंहीसर्पकोभखयाकरे। यहपरद्योअस्थिसमूहताकोनिरखि मनचिंताकरे ॥ ताकोबिदाकरिदियोसँगतेआपइकलोतहँगयो- अहँरुदनबैठीकरतबुढ़ियातासुसोपूछतभयो१९॥दोहा॥ कह्योसक लहत्तांततिनमोंसुतबारोआज॥ताकेदुखसेरुदनमेंबैठीकरतिसुराज २० कहीनृपतिनेंमातयहतीसुतबदलेप्रान ॥ देहुंगरुड़कोआजमैं सत्यबचनममजान २१ शंखचूड़वाहीसमयआयोअपनेगेह ॥ तिन लखिकेनृपकोतनयबचनकहेकरिनेह २२ मोसेंजगमेंमनुजबहु होत सुनहुभुवपाल ॥ तुमतेजीवतिसबधरायहसमभोकरिख्याल २३ ॥ सोरठा ॥ सतकीयेहोबानपरकारजकेकारने ॥ देतआपनेप्रानताते मतिसंशयकरे २४ शंखचूड़ताबेरदेवीकेमन्दिरगयो ॥ गरुड़आय त्यहिबेरलग्योजलावनचोटको २५ पहिलेकुंअरबआय तासोंआ- पुनयोंलियो ॥ बहुरिक्रोधकरिधाय नृपकोसुतभखयाकियो २६ ॥ दोहा ॥ बाचूताकेदंडतेओणितसोंभरिपूर ॥ गिरद्योनिकटताबाम केनिरखतगिरीबिसूर २७ बहुरिचेतनिजतातसोंकहिपठईसब बात ॥ आयेताकेदुःखमेंमगनतिहूं बिललात २८ ताकेढूंढनकोचले तिहूंहियेदुःखपाय ॥ शंखचूड़ तिनकोतहाँमिल्योसुमारगआय२९ कहीटेरितिनगरुड़सोंअरेमूढ़सुनुबैन॥तेरोभखयाराजसुतमोंहिबि- लोकोनयन ३० सुनिकेताकेबचनकोगिरद्योगरुड़भुवआय ॥ पायो कोयाबिप्रकोदीनोंतनयनधाय ३१ राजपुत्रसोंयहकह्योबहुरिगरु- ड़सुखपाय ॥ देवजीवक्योंआपनो मोसोंकहुसतभाय ३२ सुनोग- रुड़जेपुरुषजगकरतपरायोकाम ॥ कहाहोतयादेहको सत्यकहत मतिधाम ३३ सु प्रसन्नतबगरुड़नेकहीनृपतिबरमांगि ॥ कहोआ- जतेसर्पकोभखयादीजैत्यागि ३४ जेतेतुमपहिलेहनेतेसबदेहुजिवा- य ॥ वैनतेयतबअमृतलैदीन्हेंसकलउठाय३५ यहकहिकेनिजधामको आयोनृपतिकुमार ॥ मारगमेंसगरेमिले श्वशुरबामपितुवार ३६ पूछीयहबैतालनेसुनोनृपतिशिरमौर ॥ अधिकसत्यभोकौनको क- होआपनीदौर ३७ शंखचूड़कोअधिकसत सुनोबचनबैताल। कैसे भयोनरेशसो कहहुबचनततकाल ३८ जबीहे वहजातिकोनृप को सुतबलधाम ॥ प्राणजातडरपतनहीं बाहीनिशिदिनकाम ३९ यह सुनिकैबैतालतब चल्योबहुरितहजाय॥ ताशिवांधिकेनृपतिबर च- ल्योबहुरिसुखपाय ४० ॥

सोलहवींकहानी ॥

सुन्दरी ॥ नृपसोंयहबातबैतालकही। चन्द्रघोषएकपुरीसोहती ॥ तहँएकरहैबिवहारकपूत । तिहिनामसुरतहैदत्तअभूत १ तिहिगेहमेंएकसुतासुअनूप । उनमादिनि नामबड़ोजगरूप ॥ तबबैसबढ़यहबतभयो । नृपपैततकालहिदेनगये। २॥ मोतीदाम छन्द ॥ नृपसोंयहबातकहीतबजाय । सुनौममबैनसुचित्तलगाय ॥ यहोबहबातहिमानियजू। हितयामेंअनेक बखानियजू ३ अब बातसुनीनृपनेयहभाव । तबदासअनेक लियेसुबुलाय ॥ वहिकी तनयाकहँदेखउजाय । कहौसबलच्छ मेंसोआय ४ लख्योजब दूतनताकहँजाय । गयेसबरूपमेंआपबिकाय ॥ सबैतनसुन्दररूप निधान । ज्यहिदेखतदेवतजैअवसान ५ लखिदासनआपुसमाहिं कही । तबधीनृपकेयहयोगनहीं ॥ भुवपालजबैलखिहैंयहबाम। सबैतजिराजकोदेहिंगेकाम ६ ॥दोहा ॥ यातेयहचलिभाषियेबहुत कुलच्छननारि ॥ यहीआयनृपसोंसकल भाषेदूतबिचारि ७ कही राजनेसेठिसोंहमलायकयहनाहि ॥ जाकुआपनेगेहको देउऔर कोचाहि ८ नृपकोसेनापतिहुतो दईसेठनेताहि ॥ सुन्दरसुखद सुशीलवह दईबणिकनेब्याहि ९ एकसमयनृपजातहो सहितसबारोसंग । सोठाढ़ीदेखोसदन निरखतबड्योअनंग १० लखिकेताको रूपको बिकलभयोनृपचित्त॥ आयोअपनेमहलमें लियबुलायजन मित्त ११ चोपदारपूछनलग्यो ब्यथाकहौमहराज ॥ बातेंब्याकुलचित्तहै सोकरिलावैंकाज १२ कहीनृपतिइककामिनी देखी अद्भुतनैन ॥ उपमाताकीबनतिनहिंदूजीजगमेंहैन १३ बहुरिदास नेयहकही वहाँसेठिकोबाल॥ लायोताकोब्याहिकै सेनापतिभुवपाल १४ लच्छदेखनजेप्रथम पठयेतेभुवपाल ॥ तेलीनेसबबोलिकै कह्योबचनबिकराल१५ रतिपतिज्यहिदेखतलजै दूजीनहिंजगरूप॥ तुमनेबातबनायकै ताकोकहीकुरूप १६ यहकहिकैकीन्हेंबिदा जेतिकआयेदास ॥ राजाताकीयादिमें बैठ्योनिपटउदास १७ ताहीक्षणसेनापती आयोनृपकेधाम ॥ दूरहितेकरजोरकै कीन्ही बहुरिप्रणाम १८ महाराजजाकेलिये पावतदूतनोखेद ॥ सो दासीहैआपुको यामेंनहिंकछुभेद १९ ॥ चौपाई ॥ सुनतबचन विवक्रोधनरेशा । तेरेबचनभयोअंदेसा २० होतअधर्मीपरतिय गामी । बहुतकुबुद्धिहियेतुवजामी २१ सेनापतिबहुबातबनाई ।

नृपतिहृदयनहिंएकउभाई ॥ पायखेदहियव्याकुलराजा। गयोलोकसुरसाजिकेसाजा २२ सेनापतिनिजगुरुसनजाई। कहीकथासगरीसमुझाई ॥ ममतियकारणदीन्हेंप्राना। उचितजायसमुझावहुग्याना २३ जायनृपतिकीचितावनाई। चन्दनअगरकाठबहुलाई ॥ अबलगिचितहिअग्निनहिंदीन्ही। सेनापतिनेयहमतिलीन्ही २४ अरनृपतिकेसंग सोगयऊ। रविहिंप्रणामकरतसोभयऊ ॥ जोरिकयुगभरविसौंदोउहाथा। जन्मजन्मयहपाऊंनाथा २५ यहसुनिसेनापतिकीबामा। गईगुरूकेगृहमतिधामा ॥ पावरजायसुगुरुकीनारी। सतीहोनकहतुरतसिधारी २६ जन्मजन्मपतिपदममनेहू। कबहुंनघटैमांगवरयेहू ॥ यहकहिबहुरिकहेउबैताला। सुनहुबचनममप्रियभूपाल २७ इनमहँअधिकभयोसतकाको। नृपसमुझायकहौमोहिंताको ॥ कहविक्रमसुनुबचनसुहावा। राजाअधिकसत्यकहपावा २८ जिनसरवसदीन्हींनिजनारी। दियेप्राणनिजनाथबिचारी ॥ ताकेअधिकसत्तभोनाहीं। यहनहिंआवतमोमनमाहीं २९ स्वामिहेतसेवकदियप्राणा। पतिहितबामसोबेदबखान ॥ तातेअधिकसत्तराजाकर। भयेउसुनहुंबैतालसुमतिबर ३० ॥ सोरठा ॥ यहकहिकैबैताल चल्योबहुरिवाहपै ॥ नृपतिजायउत्ताल बाँधिताहिगृहलैचल्यो ३१ ॥

सत्रहवींकहानी ॥

तोमरछंद ॥ सुनियेबचनमहराज। उज्जैननगरीसाज ॥ तहँमहासेनिनरेश। कररोजमनहुँसुरेश १ द्विजदेवशर्मानाम। ताकेतनयअभिराम ॥ ताकोगुणाकरपूत। सोखेलजूपअभूत २ त्यहिहारिपितुधनदीन। सुगेहबंधुमलीन॥दिनकाढ़िघरसेसोय। त्यहिबुद्धिअपनीखोय ३ चलिकैगयोकहुदेश इकलख्योयोगीभेश ॥ धूनीरमायेपास। जहँबैठियोसबिलास४बोल्योसोयोगीबैन। तूकौनहैसुखदैन ॥ कहुदेउभोजनमोहिं मैंदेहुं आशिषतोहिं५ इनलायमनुजकपाल। द्विजकेनिकटततकाल ॥ लाग्योसुद्विजकोदैन इनकहीलेतबनैन ६ तबपढ्योयोगीमंत्र। कछुजानियेनहितंत्र॥तबहीसोयक्षिनिआय। बोलीबचनशिरनाय ७ जोकहैकारजमोहिं। मैंकरिदिखाऊंतोहिं ॥ इनकहीभोजनसर्व। करवाउद्विजकोसर्व८इनकरीमायाजाय।इकभवन

सुखदवनाय ॥ तामेंसुद्विजकोलाय । करवायभोजनभाय ९ वसिरैनि ताकेसंग । कियभोगभांतिअभंग ॥ पुनिप्रातसमयोपाय । गहूभवनको सुखपाय १० द्विजगयोयोगीपास । कहिवचनसहितहुलास ॥ वह गईअपनेधाम । अहिजायपुछोनाम ११ यहकहीयोगीबात । उयहि आवविद्यातात ॥ यहदियोकहियहिमंच । जामेंबसेसबतंच १२ चा-लीसदिनबहिसाधि । जातेनग्रसरव्याधि ॥ यहमल्योताकेकाज । जो कह्योयोगीराज १३ अवबीतगयोसबद्यौस । तबतौभयोहियहौस ॥ पुनिपासयोगीआय । तासौंकहीसतभाय १४ बहुकहिचल्योनिज गेह । पितुमिल्योसहितसनेह ॥बहुकहीकरणावात । इकदिवसकहँ रह्योतात १५ बोल्योगुणाकरबैन । पितुसुनौवचनसुखेन ॥ सम्सार सबकोमूल । यहिरमतजनमतिभूल १६ ॥ दोहा ॥ जैसेकंचनपात्रमें भरोहलाहलनीर ॥ तैसेमलकरग्रथितहै व्याकुलसकल शरीर १७ मातपिताशुभकोकह्यं जोकरनिन्दाकोय ॥ सोभोगतहैनर्कको ह्यधर्मकोखोय १८ तातमनुषसंसारमें नितहींआवतजायँ ॥ जैसे गजकेचरणमें सबकेपावसमायँ १९ जैसेबुँदबुँदनीरकरि होतसो जलहिसमान ॥ तैसेआनोतातजग भूलिनकोजैमान २० कठिनगृह-स्थोधर्महै सबसुयोगरूप्रास ॥ यहकहिकैनिजगेहते विदाभयोस-विलास २१ आयोयोगीकेनिकट मंचसाधनाकीन ॥ नहिंआईफिर यक्षिनी कारणकौनप्रवीन २२ ॥ चौपाई ॥ सुनुवैतालकारणग्रह भाई । साधककेचितदुविधाआई ॥ यहितेसिद्धिभईनहिंताही । कारणऔरनहींहहिमांही २३ बुद्धिबलकितोकरैनरकोई । लिखे अंकविधनाकरजोई ॥ सोसबकालसुनहुबैताला । भूठोजगकरसब जंजाला २४ यहकहिबहुरिचढ़ेउतरुजाई । विक्रमनिजकरबांधेउ जाई ॥ लेकरचलेनकीन्हीढीला । कोजानैहरिकीयहलीला २५॥

---o---

अठारहवीं कहानी ॥

दोहा ॥ अतिअद्भुतमतिकोसुखद वपवरकथाअपार॥मतिअनु-सारकहौंकछु सुनहुवचनममसार १ ॥ गीतिकाछन्द ॥ कुलिकपुर इकग्रामसुन्दरसुखदसबहिअनूपहै । राजासुदर्शीराजतहँकोकरै मतिअनुरूपहै ॥ तानगरमेंइकसेठताकीधनवतीइकबालहै । त्यहिस

रिसवरलखिब्याहकीन्होअतिहिरूपविशालहै २ ताकेभईइकक
न्यकाअनकछुकवहस्यानीभई । ताकेपितासुरलोकलीन्होंशोकता
केमतिरई ॥ भाईभतीजनलियोत्यहिधनकाढ़िनिजघरतेदई । चली
पितुकेगेहसोईसाथमेंपुचोलई ३ त्यहिराहमेंइकचोरदेख्योठग्यो
भूलीसाथहै । भूलेअचानकपावताकेलग्योयाकेहाथहै ॥ उनकहीकौ
नेंदुःखदीन्हौं इनकहीममभूलहै । करिमाफमेरीचूकसारीटँग्योतु
समसूलहै ४ तबकहीचोरसाआनयाकोदुःखनहिंकोउदेतहै । जबलँ
ध्योकर्मनफाससगरो मानचितयहलेतहै ॥ तबबामनेयहबातपूछीकौ
नतेरोजातिहैकहै । चोरकछुकहिजातहिंअतिनीचममउत्पातिहै
यातेकहूँनहिंप्राममेरेव्याहमेरोनहिंभयौ । जोदेहिअपनीपुत्रिकातू
मोलजगमेंलेलयो । इककोटिद्रव्यसुदेऊंतोकोसुयशजगमेंहोयगो । लो
भमेंमतिफँसीताकीजातिकोबलखोयगो ५ ॥ दोहा ॥ दीनीअपनीपुत्रि
काभूलीभामरफेरि ॥ कढ़ेचोरकेप्राणतबलियोअधरफोढेरि ६ कछु-
कद्रव्यनिजसाथले गईपिताकेदेश ॥ पहुंचिव्यवस्थासबकही सकल
जनायोभेष ७ भ्राताकोतबसाथले आईअपनेवास ॥ द्रव्यलईसब
साथमें कीन्हेंभोगविलास ८ भईअवस्थातरुणतिहि चढ़ीअटारी
जाय ॥ देख्योद्विजकोपुत्रइक भयोकामसरसाय ९ कहीसखीसों
बातइक ममभ्राताढिगजाय ॥ बोलिलाउद्विजपुत्रको मेरेचितकेचाय
१० सुनतलियोद्विजबोलिकै तानेअपनेगेह ॥ हँसिबोलीजातूइहां
करिहैबाससनेह ११ ममपुर्न केतंगनिशिकरतूभोगविलास ॥ तोहिं
अशरफीदेऊंप्रात समुझहियेबड़भाग १२ करीबातमंजूरतिन गई
निशात्योंआय ॥ काटीनिशित्योंभोगमेंभयोप्रातसरसाय १३ द्विज
कोसुतघरकोगयो यहनिजसखियनपास ॥ पूछीतिननेरातिकहँ कौ
न्होंभोगविलास १४ नामीशूरऔचतुरनर दाताअरुसरदार ॥
सोपालकद्रूतनेनकोमूलखेनहिंनार १५ गर्भरह्योताकेतनय भयो
व्यतीतेमास ॥ तानेअपनोयहलख्यो कीन्होंसकलप्रकास १६ शीश
जटामस्तकलसत हिमकरलसतललाट ॥ मुण्डमालकञ्चनजटित मा-
थारहितउचाट १७ तानेअपनेमेंकह्यो मंजूषासुतराखि ॥ साथ
द्रव्यअपहारपर राखिआउयहभाखि १८ जाप्रकारअपनोंलख्यो
कीन्होंसोईबात ॥ आईअपकेद्वारपै राखिसुतहिअवदात १९ इत
अपनेअपनोंलख्यो कहेसदाशिवबैन ॥ तेरेगृहमेंपुत्रइक आवतुहै
सुखदैन २० प्रातभयोअपनेतनय लीन्होंतुरतउठाय ॥ मंजूषाघर

द्रव्यको दीन्होंभञ्जनधराय २१ पण्डितलीन्हेंबोलिकै पूछ्योसगरो भेद ॥ लक्षणसबसुतकेकहा देखिग्रापनोंवेद २२ लक्षणसबवर्त्तीसहैं पुरुषग्रंगमेंराज ॥ तेसबहैंयहिंग्रंगमें निश्चयकरिहैराज २३ दियो दानबिप्रनबहुत बिदाकियोभुवपाल ॥ भयोकुलाहलनगरमें नृप सबकियेनिहाल २४ भईखुशीहैनगरमें सुयशपढ़तहैंभाट ॥ बंदछत्रनि द्विजकरिरहे छायेगुणकेठाट २५ सकलशास्त्रमेंनिपुणभो बीतेनवमो वर्ष ॥ चौदहविद्यानिपुणलखि नृपमनकीन्होंहर्ष २६ करतधर्मयुत राज्यवह प्रजासुखितदुखनाहिं ॥ एकदिवसऐसीकथा ग्राईनृप चितमाहिं २७ मातपिताकेहेतुकछु कीजैयत्ननिहारि ॥ गयोगया हरदत्तनृप दयाचित्तमेंधारि २८ लहतसोईबैकुण्ठकह दयाधरत जोचित्त ॥ ऐसोतुलसीभीकुटिल हरिसेवतहैनित्त २९ गयोजबैफलगू नदी देनपिण्डकोदान ॥ तीनहाथइकठेकढ़े लैनकाजसमिधान ३० चिन्ताकीन्हींनृपतिमन दीजैकाकेहाथ ॥ योग्यकौनकेपिण्डहै कहिबिक्रमनरनाथ ३१ पिण्डचोरकोउचितहै कहौबातग्रवनीश ॥ कहवैतालकैसेनृपति कहहुसोशिखावीश ३२ द्विजनेतोबिक्रयकि-यो कीजग्रापहीजानि ॥ राजानेबहुद्रव्यलै पालनकीन्होंमानि ३३ सकलद्रव्यहीचोरकी तातेवाकेयोग ॥ पिण्डदानताकोभयो सम-झोमतिकेभोग ३४ ॥ तोमरछंद ॥ यहसुनततदपैजाय । त्योंचढ्योहै चितचाय ॥ नृपताहिबांधिसिताव । लीन्होंहैमगकरिचाव ३५ ॥

उन्नीसवीं कहानी ॥

दोहा ॥ चित्रकूटइकनगरहैसुनुबिक्रममतिधाम ॥ रूपदत्तराजा तहां करतनीतिमयकाम १ गयोनृपतिग्राखेटको एकदिवससुख पाय ॥ भूलिमहावनमेंगयो देखततहँचितचाय २ सुखदसरोवरएक तहँ बिकसितसरसिजरंग ॥ चहुँग्रोरतरुपुष्पबहु फूलितफलितलवंग ३ शीतलमन्दसुगन्धतहँ चहुंदिशिबहतसमीर ॥ गुंजतमधुकरपुंज तहँ सरवरसलिलगँभीर ४ ग्रश्वदियेतरबांधिकै नृपतहँकियबिश्रा म ॥ ऋषिकन्याग्राईतहां लेनप्रसूनसकाम ५ लखिकैताकेरूपको नृपकेउपजोनेह ॥ जबवहग्रपनेगृहचली तबबोल्योमुखयेह ६ कौन तुम्हारीरीतियह छांड़िग्रतिथबनबीच ॥ पूजनीकसोजकह्यो जो उत्तमग्रहनीच ७ खड़ीरहीऋषिकीसुता भयेनैनजबचारि ॥ इतने

मैंऋषिहूतपां देखनआयोबारि ८ राजानेजबऋषिलख्यो कीन्हीं दण्डप्रणाम ॥ पूछीतानेराजसों ह्यांआयोक्यहिकाम ९ कहीन्नप-तिआखेटको आयोंहौंकरिनेह ॥ आयमहाबनमेंपरयों भूल्यौंअप-नोगेह १० ऋषिनेन्रपसोंबचनयक कह्योबहुतसमुझाय॥ जेतपायहौ कहौक्योंबनकेजीवसताय ११ जोआएआगतकोलखतदेतअभयकोदान बसतदेवकेलोकसो सत्यबचनन्रपमान १२ कहीनीतिऋषिनेबहुत न्रपसबकरीप्रमान ॥ बोल्योबैनप्रसन्नह्वै राजमांगबरदान १३ जो तुमभयेप्रसन्नऋषिकन्याअपनीदेहु॥ दीन्हीन्रपकोब्याहिकै करि बैतासोंनेहु १४ लैकरिपत्नीसंगमें चल्योआपनेधाम ॥ अरूतभयेरबि मध्यमें कियोतहांबिश्राम १५ ताहीनिशिकेमध्यमें बहुनिशाचर आय ॥ कहीराजसोंबामतुव भक्षणकरौंबनाय १६ तानेयहउत्तर दियो छाड़ोकौनकुरीति ॥ सातबर्षकोबिप्रसुत देयहमैंकरिप्रीति १७ राजकह्योदिनसातमें ऐयोमेरेधाम ॥ सुनिकैऐसेबचनसो गो निजथलअभिराम १८ राजाआयोगेहमें संगरूपबरनार ॥ मंत्रीने सुनियहकथा कीन्होंहर्षअपार १९ ॥ तोमरछंद ॥ मंत्रीनिकट बैठारि । न्रपकह्योबचनउचारि ॥ सबकहीबनकीबात । एकसकरी जोघात २० मंत्रीसुनेसबबैन । यहकहीतजहुअचैन ॥ द्रुकहेमपुत्तल लाय । दियमणिनसोंजड़वाय २१ त्यहिधरोमध्यबजार । चौकीदई बैठार ॥ जोलेयपुत्तलहेम । सोदेयसुतकरिनेम २२ जोदेइसुतशिर काटि । सोलेइपुत्तलडाटि ॥ यहकहिदईसबबात । जोकरैघातमघात २३ दिनद्वैगयेजोबीति । काहूनकियपरतीति ॥ दुर्बलसुद्रुकद्वि-जआय । निजबामकोसमुझाय २४ मेरेसोसुततीनि । जोदेयएक प्रबीन ॥ तोआवसोनोधाम । जातिचलैजगकाम २५ बङ्सुनतभोली बैन । छोटेनदेनकहेन ॥ पितुबड़ेकोनहिंदेय । मध्यमकह्योमनमेय २६ मध्यमकहेसुतबैन । मोहियेमैंअतिचैन ॥ पितुकोसरैजोकाम । तो देहहूकेकाम २७ ॥ दोहा ॥ मातापनकेहेतुजो बेंचिपुत्रकोलेय ॥ राजाकरिअनीतिको इयादण्डकोदेय २८ रखवारनकोसुतदियो द्विजनिजकरसोंआय ॥ लियोसबामनहेमको पुत्तलगेहमँगाय २९ देखोजगमेंधनबड़ो कियबिक्रयसुततात ॥ कोलेभोगेभोगवे करिनि जआतमघात ३० मंत्रीकोतबलायकै रखवारनसुतदीन ॥ आयोरा क्षसगेहन्रप बीतेदिवसप्रबीन ३१ पूजान्रपनेरक्षकी कीनोबिबिधि प्रकार ॥ बड़ोकियोबलिदानको द्विजसुततुरतपुकार ३२ बलिके

देतेसमयवह हँस्योबिप्रसुतधीर॥ बहुरिरोयताहीसमय धिरकार्‍यो अपधीर ३३ कबिजनसांचोकहतहैं नारीदुखकीखानि॥ करतमोहमहँसहरतें नर्कदिखावतिआनि ३४ इतनीकहिबैतालनेकहेनृपतिसोंबैन॥ मरतसमयद्विजक्योंहँस्यो मोहिंबतावहुसैन ३५॥ तोमरछंद॥ सुनियेबचनबैताल। बहुसमभिमनमेंबाल॥ करबालरच्छामात जोमितहिपालततात ३६ पुनिअभयदेतसोराज। सबदेवरच्छकसाज॥ तिनसकलछांड्योधर्म। सबदोषहैममकर्म ३७ यहसमुभिचितकेबीच। बालकहँस्योलखिमीच॥ रोयोसमुभिहियबाल सबडरतहैनिजकाल ३८सुनिबातयहबैताल। पुनिचल्योतरुततकाल नृपताहिगहिकेहाथ। लैचल्योअपनेसाथ ३९॥

बीसवींकहानी॥

सुनहुनृपतियकनग्रहै तिहिबिशालपुरनाम॥ बिपुलेश्वरराजतहां सकलधर्मकोधाम १ तासुनगरमेंबणिकइक अर्थदत्तसुखधाम ताकेकन्यासुखदइक मैनमंजरीनाम २ भईतरुणिनिजगेहपै चढ़तमासेकाज॥ देखिरूपब्याकुलभई लखिकैएकद्विजराज३॥ छप्पै लख्योबिप्रकोपुत्रभईमनमोहितनारी। इतद्विजसुतदुखपायबुद्धितसकलबिसारी॥ गयोआपनेधामकामतनअधिकसतायो। बणिकसुताइतगिरीखेदसगरेतनछायो॥ तबसखिनउठायआनिकैनीरप्यायमुखमेंदियो।बीजबलैनिजनिजकरनिबहुप्रकारतनपैकियो४ दोहा॥अरेनिशाकरनिशिसमयहमैंजरावतआनि॥सांचोतुवबिषबंधुहैतजतनहींयहबानि ५ छांड़िदियोसुनितोहिंजब कीन्होंपानपयोधि॥अबताकेबदलेसबै मारतबिरहिनिसोधि ६ महाबिरहब्याकुलरहैबणिकसुतादिनरैन॥कह्योसखीयहहाललखिधरिधीरजकैबैन७ यहकहकेनिजगेहको गईसखीततकाल॥ इनचितमेंदुखपायकेकीनोऐसोहाल ८ डारीफांसीग्रीवमेंखैंचनलागीसोय॥ इतमेंसखिआयकेगहेदोउकररोय ९ डारीरस्सीकाटिकेकह्योबहुसमुझाय॥ लाजंतेरेमिषको उपायकरहोसुखपाय १० कमलाकरकेगेहमें गईसखीतिहिकाल॥ वहांजायकेतिनलख्यो ताकोऐसोहाल ११ बीततिहीजोबामपै बियाअनेकअपार॥ सो

ह्रिनसुतपैलखी बोलीबचनबिचार १२ कमलाकरचलसंग अमनाथ करौंतत्रधीर ॥ गयोसाथताकेखई बिप्रपुत्रबरधीर १३ देखीताने बामबङ व्याकुलबिरहबिहाल ॥ सांसलैतथाबिप्रको गयोप्राण ततकाल १४ गयेदुऊनुकोसाथलै मरघटमेंसबलोग ॥ साथकियो अतिदुऊमने लखादैवकोयोग १५ आयेहोपरदेशतेबखिकसुता पतिसोय ॥ लखीबामताने खईपरपतिकेसँगजोय १६ जरतिहतो तिहिसंगमें लखियहचरितनिदान ॥ हुकैव्याकुलबिरहमें दीने यानेप्रान १७ यहलखिकेसबनगरकोंकहनलगेएबैन ॥ ऐसोअचरज आजलौं देख्योसुन्योननैन १८ कहबैतालहूनतीनिमें अधिककाम होकाहि ॥ नृपतिकहीताकोसोपतिजरयो तियाकोचाहि १९ ॥ तोमरछंद ॥ तिहिपर्मकामीजानि । बैतालउरमेंमानि ॥ यह सुनतबचनअघाय। पुनिचल्योतरुपैजाय २० तिहिसंगबिक्रमवीर। लैचल्योकैमतिधीर ॥ यहभईपूरीबात। कहुऔरचर्चातात २१ ॥

इक्कीसवींकहानी ॥

चौपाई ॥ कहबैतालसुनुबचनसुहावा । जयफलनगरनृपतिइक पावा ॥ बर्द्धमानराजातहँअहई । नीतिनिपुणताकोयशचहई १ ताकेतनयचारिभेभाई । चारोंकुमतिपितहि दुःखदाई ॥ एक जुआरीकरबद्कर्मा । वेश्यागामिद्वितीय अधर्मा २ तृतीयजार जानहिंनृपजेही । चौथानास्तिकपालकदेही ॥ एकदिवसनृपत- नयबुलाये । नीतिबचनतिनकोसमुझाये ३ चलहुसुमतितजिकुमति कुठारी । ज्ञानतरुहिजोकाठनहारी ॥ सोंचिज्ञानजलतरुअति जामा । दयहुन्द्रीसोइ शाखानामा ४ यहिबिधिपितु बहुज्ञान सिखावा । नहिंबिद्यामतासुमनपावा ॥ चारौतासँगगयेबिदेशा । पढ़नशास्त्रमनकरअंदेशा ५ कछुककालमेंबिद्यापाई । आवतहते गेहचहुंभाई ॥ मारगमाहिंलख्योयकख्याला । भयेबिकललखि चरितबिशाला ६ कुंजरमरयोलियेमृगराजा । काटतदासुबि- क्रयकाजा ॥ इनचारिनयहबातचलाई । बिद्याकहअजमावहुभाई ७ ॥ दोहा ॥ दैकरिताकोकछुकधन बिदाकियोततकाल ॥ जोहि ताशुकोसकलतनं मंचपक्योकरिख्याल ८ भयोसिंहचैतन्यतब मारे चारोंभ्रात ॥ कहबैतालराजासुनहुंअद्भुतचरितसोतात ९ इनमें

मनखकौनसो भयोकहहुसमुझाय ॥ नृपमूरखहैवाहहीजानेद्विजो
जिवाय १० यहकहिकेबैतालतब तुरतचल्योतरुजाय ॥ नृपताको
फेरबांधिकैचलतभयोसुखपाय ११ ॥

बाईसवींकहानी ॥

गीतिकाछंद ॥ नगरीलसैशिवपुरीभुवपैधर्म अरुधनसोंभरी ।
राजाबिदग्धसराजताको करैहरिपदमतिधरी ॥ ताकेनगरबसि
द्विजनरायननामतासुबखानिये । इकदिनकरीतिनचित्त चिन्ता
बयसहद्विप्रमानिये १ भईकायाजीर्णमेरीचरितकछुअबकीजिये ।
पैठिदूसरिदेहमें सबजगतकेसुखलीजिये ॥ यहजानिचित्तबिचारि
दृढ़करिधँस्यौ दूसरिदेहमें । धँसतसमयवहहँस्योरोयोगयोअपने
गेहमें २ घरकेसबैतिहचरितजानतआयतिननेयहकही । योगी
भयोमैंछांड़िमाया यहैचितआनोसही ॥ इतनीकहीपुनिपढ़न
लाग्योज्ञानकोचरचासबै । केतिककहोतिहियोगचरचासकलते
तापैफबै ३ ॥ तोमरछंद ॥ यहिभांतिज्ञानअपार । मुखसेकहेउसुख
सार ॥ जगसकलआवतजात । मायासुकृत उतपात ४ जानोसो
मोहअनेक । तिहिजनितस्वल्पबिबेक ॥ जगमेंजितेनरजान । ते
मोहहीकीखान ५ जोकरतहैंअभिमान । तेसकलअवगुणखान ।
धरियोगकोशिरभार ॥ तपतपतअग्निमझार ६ संसारमेंनहिंसार।
लखिलेहुचित्तबिचार ॥ करियोगकोजगनाम । यातेफिरतसब
काम७ तेलहतहैंदुखनीच । जबनिकटआवतिमीच ॥ यमपासकिं-
करआय । करिपास ना बहुभाय ८ एकहुमुखतेबैन ॥ सबको
लख्योनिजनैन ॥ तिनयोगसाधनकीन । करियत्नबहुतनवीन ९ यह
कहिनकुरिबैताल । बोल्योबचनततकाल ॥ क्योंहँस्योद्विजबरआप ।
पुनिरोइयोकिहिताप १० मोसोंकहौसमुझाय । सुनिकहैबिक्रम
राय ॥ जादेहमेंसुखपाय। बहुदियेकालबिताय ११ निजसिद्धबिद्या
काज । पुनिछित यदेहीसाज ॥ पूरीभईयहबात । द्विजहँस्योयोंसुनु
तात १२ नृपकेबचनसुनिहाल । तरुपैचल्योबैताल नृपताहिबांधिसु
ढार ॥ सँगलैचल्योतिहिबार १३ ॥
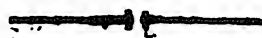
तेईसवींकहानी ॥

भुजंगछन्द ॥ बहुरिवचनबैतालराअसोंबोल्यो। लसैधर्मपरग्राम भूमिमेंतोल्यो ॥ गोविन्दनामसुविप्रलसैताठौरहै। चारितासुके पुत्रद्विजनशिरमौरहै १ अपनेपितुकोवाक्यसदासोपालते। गुणवि- द्यामेंचतुरउमरवयवालते ॥ एकपुत्रतिनमाहिंगयोसुरलोकको। भयोपितादुखलीनकियोअतिशोकको २ताकेदुखमेंपागिपितादुख पाइयो। ताकोसुनिकेविपतिसुधर्मीआइयो॥ कह्योताहिसमुझाय बहुतविधिज्ञानहै। यहमनुष्यकीदेहसदादुखखानहै ३ पहिले मातागर्भजवैहियआवही। आयगर्भकेबीचबहुतदुखपावही॥बहुरि तरुणतापायकामिनीसंगमें। पावितबह्वादुःखरंग्योतारंगमें४ बहुरि बन्धुनिपायदेहदुखपावही। शिथिलहोतअँगअंगसुसुखःनपावही॥ यहझूठोसंसारदुःखकोमूलहै। यामेंसुखनहिरंचपलहिपलशूलहै ५ दुरैनायकाठौरकालजबआवही। करैअनेकनयत्नबचननहिंपावही॥ सकलशास्त्रकोछानिकरैजोज्ञानहै। मूरखजड़तापायपापमथवाम है ६ इतनीमनुषसुआयदशाहोजातहै। यौवनसमयनहिंनेकसुबुद्धि रहातहै॥ बहुरिअवस्थाइद्धबालदुखपावई। शेषरहीबयजोयकुयो गनशावई ७ जैसेजलकीलहरजीवत्योंजानिये। भ्रमतरहतचहुंओर सुचंचलमानिये॥ यातेसुखनहिंदेहसुनोंममगाथहै। सुखदुखसगरी बातदेवकेहाथहै ८ कलियुगकेबलपायरह्योजगछायके। सत्यधर्म मर्यादगईसुनशायके॥ राजालोभीसत्वभूमिनहिंदेतहै। दुराचार रतहोयमनुषदुखलेतहै ९ नहिंद्विजकोसन्तोषवामचंचलभई। पितु निन्दाकरसुतभीतिसबनशिगई॥ मातपितासुतबन्धुकामनहिंआइ है। केवलपुण्यऔपापसुआयसताइहै १० देखतएसबचरितमनुष जिवनयनहै। सोकुबुधिकोमन्दजकतनहिंचैनहै ॥देखोचित्तविचा- रकहाँबहुख्यालहै। आंधातासेभूलतचैनकिकालहै ११ जिननेबां- ध्योसेतुसमुद्रभिबीचमें। रावणसेबलवानमरेतेमीचमें ॥ जलचरथल चरजीवजगतचरजानिये। इनकुंभजतकालसुनिश्चयमानिये १२ आ- वजगतकोमध्यलहतसबदुःखहै। जेहरिकेपदलीनतिन्हैंसबसुखःहै ॥ इतोकहोसमुझायजबैंब्रह्मचिराजने। सुतसोंकहोबुलायवचनद्विजरा- जने १३ करतयहाँमैंयज्ञसमुद्रतुमजाइयो। देकरिकछुद्रव्यसमुझ भुपलाइयो॥ भ्रातातीनोंसंगचलेसुखपायके। गयेसमुद्रकेतीरकह्यो

चितचायकै १४ लीनोकच्छपजायसुधीमरघोलिकै। आगुसमेंतकरारकरीमतिखोलिकै॥तीनिऊंमेंसंताहिनाहिंकोउलेतहै। आपुसमेंकरिबादचित्तदुखदेतहै १५॥ दोहा॥ भोजनमेंमैंचतुरहूं कहो प्रथमसुतबात॥ नारीराखनमेंचतुरकह्योद्वितियअवदात १६॥ सोरठा॥ कह्योतीसरेबैन शय्यासोवनचतुरमैं॥ योंकहितजिकैचैन गयेन्रपतिकेद्वारपै १७॥ छन्द॥ गयेन्रपतिकेद्वारसबैदुःखपायकै। राजासोंयहकथाकहीसमुभायकै॥ अपनेपूछीकथाकरतक्योंबाद है। मेरेआगेआयकरोफिरयादहौ १८ तीन्योंकहेसुनायजुदेगुखआपने। लईपरीक्षाराजमिटेदुखदापने॥ कियोबहुतसनमानजानिगुणखानिहै। परखेतिनहिंबनायदियेसुखप्राणहै १९ यहकहिकै बैतालन्रपतिसोंबोलियो। कहौकौनहैसुघरनामस्युंहिखोलियो॥ कहबिक्रममहराजसेजोज्यहिज्ञानहै। सोईचतुरसुजानबड़ोबुधिमानहै २० इतिकसुनतबैतालचल्योतरुजायकै। बिक्रमपाछेधायगह्योअकुलायकै॥ बाँध्योनिजकरताहिचल्योलैगेहको। हियेमध्यसुखपायसुसांवनेहको २१॥

चौबीसवीं कहानी॥

दोहा॥ न्रपइकदेशकलिंगहै धरणीतलमेंतात॥ यज्ञधर्मद्विजजहँ बसे सुनौतहाँकीबात १॥ तोमरछंद॥ तिहिसोमदत्ताबाम। सूरतिमनोहरकाम॥ सोकरतअतिसुखैन। ताबामकेसुखदेन २ प्रगट्यो तनयअभिराम। सोसकलमतिकोधाम॥ योंबहुतबीतेकाल। बिद्यापढ़ीशिशुहाल ३ द्वादशबरषगेबीति। पढ़िचल्योद्याबिनीति॥ सोसुघरअतिहीबाल। पितुकोसुआज्ञापाल ४ आयोसमयताजागि। सुतगयोप्राणहिंत्यागि॥ अतिभयोद्विजकोदुःख। सबछांड़िदीनोसुःख ५ तबज्ञातकेजनआय। लेचलेकांधचढ़ाय॥ लैधरोभूमिमशान। सबलगेदेखनआन ६ तिहिथलसोयोगीएक। करियोगसहितविवेक॥ तानेबिचारीचित्त। इहिदेहबसियेमित्त ७ योंचित्तदृढ़मतकीन। तादेहआयप्रबीन॥ बैठ्योभयोततकाल। सबरहेलखिकैख्याल ८ जबलख्योताकेतात। जनभ्योचित्रअद्भुतबात॥ ताकोभयोबैराग। गयोसोहतनतिभाग ९ संसारसोंसुखखोय। पुनिहँस्योरोयोसोय॥ यहकहिबहुरिबैताल। बोल्योबचनततकाल १० त्यहिकहो

विक्रमधीर। क्योंहँस्यो द्विजवरबीर॥ पुनिरोइयोक्यहिकाज। मोसोंकहौमहराज ११ सुनुवचनधीरबैताल। द्विजलख्योअद्भुतख्याल॥ सुतदेहमेंसरसात। देख्योसोयोगीजात १२ लखितासुविद्याबीर। योंहँस्योद्विजमतिधीर॥ पुनिमाहकरिनिजदेह। रोयोकियेहियनेह १३ यहसुनिचल्योतरुजाय। सँगलियोअपनेलाय॥ लैचल्योअपनेसाथ। मारगगह्योअपनाथ १४॥

पच्चीसवीं कहानी॥

हरिगीतिका॥ बैतालबोल्योसुनौराजाबातइकसुनिलीजिये। दच्छिणदिशाइकनगरसुन्दरधर्मपुरसुनिलीजिये॥ तहँकोमहाबलबड़ोराजाधर्मकोअवतारहै। तापरचढ्योइकऔरन्टपलियघेरसोइकबारहै १ सबगईमिलिकैसैनअरिमेंनिपटजियदुखपायकै। रानीऔपुत्रीसंगलैकैगयोबनबिलखायकै॥ पहुंच्योबहुतसोदूरिमारगप्राणकोसमयोभयो। रानीऔपुत्रीछाँड़िताबलग्रामकेभीतरगयो २ त्योंसाथघेरोताहिभीलनयुद्धलाग्योहोनको। दोनौंबराबरसूरबाँकेघटिकहौकहिकौनको॥ इकयामभरिकैलड़ेदोउबीरचित्तबढ़ायकै। यकलग्योतीरकपालन्टपकेगिरयोभुमरिखायकै ३ इकआनिकाट्योग्रीवन्टपकोलखेदुखरानीकियो। सोभईव्याकुलदेखिपतिगतिगमनऔरैबनकियो॥ यहिभांतिचलिकैकोसद्वैइकथकितह्वैबैठीजहां। इतनेमेंचंद्रसेनिराजासंगसुतलीन्हेतहां ४ आखेटकरिबैबनहिंआयोपुत्रसोंतिनयहकही। कहँतेचरणकेचिन्हआवेकठिनबनदुर्घटमही॥ सुतनेकहीयहचिन्हराजाबामहीकेजानिये। अबहीगईकोउलखुचलिकैबातचित्तप्रमानिये ५॥ दोहा॥ राजानेसुतसोंकही जाकेदीरघपांव॥ सोईतोकोदेउंगोदुसरिमेंसँगलाव ६ बचनबहुएैसेभये आपुसमेंद्वौधीर॥ आगेदेखेजायकै लखीदोउमतिधीर ७ बचनबद्धजैसेभये लीन्हेंताहीरीति॥ गयेआपनेगेहको करिकेमनमेंप्रीति ८ रानीराखीकुवँरने ताकीसुतासुराज॥ इनदुहुनकेसुतनमें नाताकौनसमाज ९ उत्तरआयोन्टपहिनहिं सुनतभयोअज्ञान॥ ह्वैप्रसन्नबैतालने कहीमांगबरदान १० एककहततोसोंन्टपति मानहमारीबात॥ योगीजाश्मशानभूमिमें करिहैतेरीघात ११ काटेहमरोमायजे जासुदासमदेह॥ यांतिघोलयहनामहै करि

मतितासोंनेह १२ जबपूजनवहकारचुकै तोसोंकरिहैबैन ॥ करिप्र-
णामसाष्टांगतू समुझिलीजियोसैन १३ ॥ सोरठा ॥ कहियोतासों
बात राजनकासरदारमैं ॥ नहिंकरिजानततात मोकोआपुसिखा-
इये १४ जबवहकरैप्रणाम खड्गतासुशिरकाटियो ॥ करियोयेही
काम तबसुखराजाहोयतू १५ ऐसेसबसमुझाय बिक्रमकोसुचितो
कियो ॥ चल्योगयोसुखपाय कालिबतिबैतालतब १६ रहेएकनिशि
यामके बिक्रमसबलेसाथ ॥ आयोयोगीकेनिकट कहीजोरिदुहु
हाथ १७ योगीबहुतप्रसन्नह्वै कहेन्रृपतिसोंबैन ॥ तूकुलमेंसूरजभयो
लखिफूलतमैंनैन १८ मंत्रनसोंअभिषेककरि रावकोलियोजगाय ॥
कियोहोमबलिदानबहु अपनेचितकेचाय १९ सामग्रीजितनीहुती
दक्षिणओरहिलाय ॥ सकलप्रीतिकेभावसों देवहिदईचढ़ाय २०
धूपदीपनैवेद्यदे न्रृपसोंकहीसुनाय ॥ करिप्रणामसाष्टांगतू प्रभुता
बढ़ैबनाय २१ अतिअधीनह्वै न्रृपतिने दीनोंबचनसुनाय ॥ करिप्र-
णामजानतनहीं दीजैमोहिंसिखाय २२ ज्योंहीकरनप्रणामको-
योगीनायोशीश ॥ खड्गएकबिक्रमदियो काट्योशिरतबई
हुरिआयबैतालने दियेपुष्पबरषाय ॥ समयभयोआनन्दब
बरणयजायों २४ जोअपुकोमारगोचहै करिकैमनमेंघात ॥ त
ाहयमारिये दोषहोयनहिंतात २५ अपनेसुखतेयहकही
महराज ॥ साहसलखिकैन्रृपतिको ह्वैप्रसन्नसुरराज २६ र
अहकही कथासुयहसंसार ॥ भुवमण्डलकेबीचमें होयप्रसिद्धअपार
२७ जबलगिरबिशशिगगनमें सुनुन्रृपबचनहमार ॥ तबलगिरहियह
कथा थिररहिहैसंसार २८ इंद्रगयोनिजलोकको करिकैबचन
उद्दार ॥ तबदोनोंसबतेलमें दियेन्रृपतिनेडार २९ भयेतासुकेबीरहै
न्रृपसोंकहीसुनाय ॥ आज्ञाजोकछुहोयसो करिहैंचित्तलगाय ३०
जबमेंसुमिरणतुवकरौं आवोतबममपास ॥ ऐसेउनतेबचनलै आयो
अपनेबास ३१ निष्कण्टकह्वैराजतब करनलग्योसुखपाय ॥ बहो
धर्मकीरीतिजग दीनोंदुःखनशाय ३२ कह्योसकलबैतालने न्रृपसों
कथाप्रसंग ॥ दीनोंराजदिवायकै करियोऐसोसंग ३३ यहप्रसंस
नरनाथको कृपापायकेईश ॥ सुघरजननपैजगतमें कृपाकरहुजग-
दीश ३४ राजकाजमेंसुघरअति करतपरायेकाम ॥ धर्मनिधिगुण-
निधिरूपनिधि नवनिधिनिधिबनश्याय ३५ ॥

विक्रम बिलास समाप्तः ॥